प्रथम संस्करण वर्ष 2017-18

हृदयंगम

राजभाषा पत्रिका

डी.जी.एच.

हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय
पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय
तेल उद्योग विकास बोर्ड भवन, प्लाट सं० 2, सैक्टर – 73, नोएडा – 201301
दूरभाष : 0120-2472000, 2472161.
फैक्स : 0120-2472049
वेबसाइट : www.dghindia.gov.in

हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय, नोएडा

प्रथम संस्करण	वर्ष 2017-2018

संरक्षक	श्री अतनु चक्रवर्ती, महानिदेशक, डी.जी.एच.
उप-संरक्षक	श्री महेंद्र प्रताप, उप महानिदेशक
मार्ग दर्शक	श्री शिलादित्य भट्टाचार्जी, श्री राजीव कुमार सिन्हा, श्री अनिल कुमार अग्रवाल तथा श्री संजीव नंदा
संपादन एवं समन्वयन	श्रीमती इरानी भराली तथा श्रीमती अनिता वशिष्ट
संपादक मंडल	श्री अनिल मिश्रा, मुख्य संपादक, श्री रामबाबू सिंह, श्रीमती ऋचा चौहान तथा श्री हरीश कुमार आनंद
सदस्यगण	श्री उज्जवल कुमार, श्री अवनीश कुमार, श्री टी.अश्विनी कुमार, श्री आनंद कुमार, श्री प्रांजल पाण्डेय, श्री सौरभ कुमार, श्री कपिल खेड़ा तथा श्री अजय कम्बोज

"पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के निजी विचार हैं | रचना की मौलिकता, उनका संकलन तथा अन्य किसी विवाद के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे |"

संरक्षक का संदेश

हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय, नोएडा की वार्षिक पत्रिका **'हृदयंगम'** के प्रथम अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है | पत्रिका **'हृदयंगम'** का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के उतरोत्तर विकास की दिशा में एक सराहनीय कदम है | संघ सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं प्रचार-प्रसार में हिंदी पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है | इससे कार्यालयों के कार्मिकों को अपने नेमी कार्यकलापों से इतर अपनी साहित्यिक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का एक सुगम मंच भी प्राप्त होता है |

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय की पत्रिका **'हृदयंगम'** के प्रकाशन से अधिकारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति रुझान बढ़ेगा और अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रोत्साहन मिलेगा |

इस पत्रिका के प्रकाशन में जिन अधिकारियों/कर्मचारियों की रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं, उन्हें मैं बधाई देता हूँ| पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सभी अधिकारी/कर्मचारी भी बधाई के पात्र हैं |

शुभकामनाओं सहित |

(अतनु चक्रवर्ती)
महानिदेशक, हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय

उप संरक्षक का संदेश

हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय अपनी वार्षिक गृह पत्रिका **'हृदयंगम'** के प्रकाशन का शुभारंभ करने जा रहा है | यह अत्यधिक प्रसन्नता का विषय है | गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा केंद्र सरकार के कार्यालयों को राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं शासकीय कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए सौंपी गई ज़िम्मेदारी को देखते हुए हिंदी पत्रिका के प्रकाशन की शुरुआत एक प्रशंसनीय कदम है | मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अनुरोध करता हूँ कि वे कार्यालय में राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय की अपेक्षानुसार शासकीय कार्यों में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें | विशेषत: उच्चाधिकारी राजभाषा कार्यक्रम के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यक्तिगत रूचि लें और स्वयं हिंदी में कार्य करके अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करें |

बहुत स्वाभाविक है कि प्रथम अंक में अनेक खामियां हो सकती हैं | सभी हिंदी प्रेमियों से अनुरोध है कि इस पत्रिका को बेहतर बनाने में अपने सुझाव हिंदी विभाग को प्रेषित करें और अपनी रचनाओं एवं प्रविष्टियों के योगदान द्वारा प्रकाशित होने वाली सामग्री को और अधिक दिलचस्प व उपयोगी बनाने में सहायता करें | हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय की प्रथम वार्षिक हिंदी पत्रिका के प्रकाशन में सम्मिलित सभी कार्मिकों को बधाई |

शुभकामनाओं सहित |

(महेंद्र प्रताप)
उप महानिदेशक

आभार

राजभाषा हिंदी की उत्तरोतर विकास की तरफ बढ़ते प्रयासों में से एक प्रयास **‘हृदयंगम’** हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय की प्रथम वार्षिक हिंदी पत्रिका के रूप में आपके सामने प्रस्तुत है |

भारत सरकार के प्रत्येक सरकारी संस्थान में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन प्रगामी रूप से सुनिश्चित करने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं | नीति के अनुसार सरकारी संस्थान चाहे वैज्ञानिक हो अथवा गैर-वैज्ञानिक, राजभाषा कार्यान्वयन की ज़िम्मेदारी प्रत्येक को समान रूप से दी गई है |

इसी भूमिका का निर्वहन करते हुए माननीय महानिदेशक, हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय के सुयोग्य दिशा निर्देशन एवं उप महानिदेशक के प्रभावी मार्गदर्शन में इस पत्रिका की अवधारणा बनाई गई और प्रस्तुत रूप दिया गया | कार्यालय में राजभाषा के प्रसार एवं प्रचार के लिए निहित इस प्रयास के लिए मैं अत्यंत आभार व्यक्त करता हूँ |

मुझे खुशी है कि कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति रुझान में लगातार वृद्धि हो रही है जिसके परिणामस्वरूप हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय को राजभाषा संस्थान द्वारा आलेख प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार तथा हिंदी में किए जा रहे कार्य में उत्तरोतर वृद्धि तथा भागीदारिता के लिए दो शील्ड प्रदान की गई | इसके अतिरिक्त कार्यालय ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नोएडा द्वारा कविता लेखन प्रतियोगिता में प्रथम तथा निबंध लेखन में तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया | साथ ही साथ कार्यालय में राजभाषा से जुड़े कार्यकलापों / प्रतियोगिताओं / संवादों में डी.जी.एच. परिवार के सदस्यों की भागीदारी बढ़ती जा रही है | आप सभी के द्वारा हिंदी अनुभाग के प्रयासों में योगदान के लिए मैं कोटि-कोटि धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ और कार्यालय इसी प्रकार भविष्य में आपके सहयोग की आशा रखता है |

‘हृदयंगम’ में प्रकाशित सभी रचनाओं के लेखकों को बधाई तथा इस पत्रिका के प्रकाशन से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को आभार |

शुभकामनाओं सहित |

राजीव कुमार सिन्हा
(महानिदेशक के मुख्य तकनीकी अधिकारी
एवं प्रभारी राजभाषा अधिकारी)

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	संघ सरकार की राजभाषा नीति के महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश	
2.	क्या है ये ज़िंदगी	
3.	मेरी आशा	
4.	चलो तेल बचाएं	
5.	हमारा लड़का इंजीनियर है	
6.	जिंदगी	
7.	मोटापे की मारी मैं बेचारी	
8.	मां की गोद	
9.	उड़ान	
10.	जीवन चक्र-एक सांसारिक खेल	
11.	भ्रष्टाचार	
12.	बेरंग जिंदगी	
13.	इन्सानियत	
14.	तुम	
15.	ताकत	
16.	हिंदी दिवस	
17.	इंद्र तू क्यों रूठ गया	
18.	एक और दामिनी	
19.	सुनहरे निशां	
20.	बुद्धिमता	
21.	नए साल का तोहफा	
22.	शब्द	
23.	भगवान है	
24.	सूरज की कहानी (बाल मुख)	
25.	तनाव कैसे दूर करें?	
26.	ऊर्जा सुरक्षा एवं ऊर्जा के वैकल्पिक स्त्रोत	
27.	सुदूर संवेदी उपग्रह (रिमोट सेंसिंग सेटलाइट) द्वारा तेल और गैस रिसाव का पता लगाना	
28.	वर्तमान जीवन में नैतिक मूल्यों का महत्व	
29.	शिक्षा में भाषा और संस्कृति	
30.	Deccan Synclise रहस्य एवं तेल व गैस के खोज की सम्भावनाएं	
31.	चुटकुले	
32.	विद्वानों के अनमोल वचन	

<u>संघ सरकार की राजभाषा नीति के महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश</u>

केन्द्र सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों, आदि में राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के संबंध में भारत सरकार द्वारा समय-समय पर जारी की गई सूचनाएं/परिपत्र, आदि के महत्वपूर्ण अनुदेश संक्षेप में निम्न है :-

1. **<u>राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) का अनुपालन</u>** – राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी होने वाले सभी कागजात यथा - संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट, सरकारी कागज पत्र, संविदाएं, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञा पत्र, टेंडर नोटिस एवं टेंडर फॉर्म- द्विभाषी (हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों) होने चाहिए |

(i) सामान्य आदेश में सभी प्रकार के ऐसे आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए हों और स्थायी प्रकार के हों, को शामिल किया जाता है |

(ii) सभी प्रकार के ऐसे आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस, आदि जो सरकारी कर्मचारियों के किसी समूह अथवा विभिन्न समूहों के संबंध में जारी किए गए हों |

(iii) सभी प्रकार के ऐसे परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए अथवा सरकारी कर्मचारियों के संबंध में जारी किए गए हों |

2. **<u>राजभाषा नियम, 1976 के नियम-5 का अनुपालन</u>** – हिंदी में प्राप्त पत्र, आदि के उत्तर हिंदी में ही दिए जाएं | पत्र चाहे किसी भी क्षेत्र से अथवा किसी भी राज्य सरकार अथवा केन्द्रीय सरकार अथवा व्यक्ति से प्राप्त हुए हों |

3. **<u>लेखन सामग्री, रबड़ की मोहरें और फॉर्म, आदि का द्विभाषीकरण</u>** – विदेश स्थित भारतीय कार्यालय सहित सभी मंत्रालयों / विभागों से संबंधित लेखन सामग्री, फॉर्म, मैनुअल, प्रक्रिया साहित्य, पत्र शीर्ष, लिफाफे, रजिस्टरों के नाम, रबड़ की मोहरें, निमंत्रण पत्र, विजिटिंग कार्ड, पहचान पत्र, आदि अनिवार्य रूप से हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में बनाई जाएं | (रबड़ की मोहर के हिंदी अक्षर का आकार अंग्रेज़ी अक्षर के समान अथवा उससे बड़ा होना चाहिए)

4. **<u>साइन बोर्ड, सूचना पट्ट, आदि का द्विभाषी / त्रिभाषी प्रयोग</u>** – भारत सरकार के 'क' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों के साइन बोर्ड, काउंटर बोर्ड, सूचना पट्ट, इत्यादि को हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में प्रदर्शित करना चाहिए | 'ख' और 'ग' क्षेत्रों में स्थित ऐसे सभी बोर्ड त्रिभाषिक रूप में अर्थात हिंदी, अंग्रेज़ी और क्षेत्रीय भाषा में प्रदर्शित किए जाने चाहिए और तीनों भाषाओं के अक्षरों का आकार समान होना चाहिए |

5. **<u>वाहनों का नाम</u>** – वाहनों पर कार्यालयों के नाम अंग्रेज़ी और हिंदी दोनों भाषाओं में लिखवाए जाएं | हिंदी में नाम ऊपर हों और अंग्रेज़ी में नीचे |

<u>राज्यों का वर्गीकरण:</u>

भारत में हिंदी बोलने और लिखने की दृष्टि से देश के राज्यों / संघ राज्य क्षेत्रों को तीन क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है :-

'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
बिहार	गुजरात	आंध्रप्रदेश, सिक्किम
हरियाणा	महाराष्ट्र	अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा
हिमाचल प्रदेश	पंजाब	असम, पश्चिम बंगाल
मध्य प्रदेश	चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र	तमिलनाडु, लक्षद्वीप
राजस्थान	दादर एवं नगर हवेली	मणिपुर, पांडिचेरी
उत्तर प्रदेश	दमन दीव	मिजोरम, तेलंगाना
अंडमान निकोबार द्वीप समूह		गोवा, मेघालय
दिल्ली		कर्नाटक
उत्तराखण्ड		जम्मू-कश्मीर
झारखण्ड		केरल
छत्तीसगढ़		नागालैंड
		ओडिशा

क्या है ये ज़िंदगी

एक खामोशी जिसे बोलना है,
एक दीवार जिसे पार कर जाना है,
एक स्वप्न जिसे पाना है,
ज़्यादा तो नहीं मांगा है ज़िंदगी से,
सोचती हूँ क्या है ज़िंदगी |

एक दोस्त, मुझे समझने के लिए,
एक हृदय, मेरी भावना को समझने के लिए,
एक बचपन, जो मुझे फिर से जीना है,
सोचती हूँ क्या है ज़िंदगी |

एक लक्ष्य, जहां पहुँचना है,
एक आशीर्वाद, जो पाना है,
थक जाऊँ गर सहारा दे मुझे एक कन्धा,
क्या ये ज़्यादा सपने हैं, ज़िंदगी से,
सोचती हूँ क्या है ज़िंदगी |

सच को ढूँढने का साहस,
ज़्यादा पाने का ज्ञान,
एक सुंदर हृदय जो अपनाए सबको,
ज़्यादा तो नहीं मांगा है ज़िंदगी से,
सोचती हूँ क्या है ज़िंदगी |

पूनम
कार्यकारी अभियंता (उत्पादन)

मेरी आशा

अंग्रेज़ तो भारत छोड़ गए पर हिंदी से हमारा नाता भी तोड़ गए
अंग्रेज़ी से मुख मत मोड़ो पर हिंदी को भी साथ में जोड़ो
इस तोड़-मोड़ के चक्कर में हिंदी ही मरती जाती है
हमारी भाषा हम से ही दूर होती जाती है |

न बैर मुझे अंग्रेज़ों से न बैर मुझे अंग्रेज़ी से
पर नफरत होती है उनसे जो ना आने पर
भी बोलते हमसे टूटी - फूटी अंग्रेज़ी में
हिंदी बोलने में उन्हें अड़चन है
क्या अंग्रेज़ी बोलने में ही बड़प्पन है
ये तो बस नई पीढ़ी का लड़कपन है
उनके लिए तो ये एक फैशन है |

पर नयी पीढ़ी का इसमें क्या कसूर
जब हमने ही बना लिया अंग्रेज़ी का दस्तूर
इंग्लिश मीडियम स्कूल में कराते हैं एडमिशन
चाहे देनी पड़े कितनी ही डोनेशन |

मोदी के साथ आज देश ने भी हिंदी को अपनाया है
डी.जी.एच. ने भी हिंदी में कदम बढ़ाया है
हिंदी में काम करने पर प्रोत्साहन दिलवाया है
मुझे आज इस काव्य पाठ प्रतियोगिता में खड़ा करवाया है |

मैं सोचती हूँ क्या हक है मुझे इन इनामों का
राष्ट्रभाषा को हिंदी के माध्यम से अपनाने का
तरीका बस यही है काम करवाने का
नहीं यह मार्ग नहीं है अपनी राष्ट्रभाषा बचाने का |

इक दिन ऐसा आएगा अंग्रेज़ी में काम करने पर
डी.जी.एच. द्वारा इनाम दिया जाएगा, हिंदी में तो काम स्वतः ही हो जाएगा
यही है मेरी आशा, अव्वल दर्जे पर हो हिंदी भाषा
जैसे बिंदी है सौन्दर्य हमारे वेश की, वैसे हिंदी है गौरव हमारे देश की |

अनीता अगनानी,
मुख्य प्रबंधक (वित्त)

चलो तेल बचाएं

चलो भाई तेल बचाना है
दफ्तर से घर, घर से दफ्तर
सबको पैदल / साईकिल चलवाना है |
तेल तो काला सोना है
आसानी से क्यों खोना है
कुछ कल के लिए भी रखना है
अब पैदल ही हमें चलना है |

चलो भाई तेल बचाते हैं
दफ्तर एक कार में आते-जाते हैं
आज मेरी, कल उसकी
सबकी बारी लगाते हैं
आओ हम तेल बचाते हैं |

देश को आत्मनिर्भर बनाते हैं
आज भी इसका रोना है
दोहन इसका होता है
गर आज भी न चेते हम
लग्ज़री कार-बाइक न छोड़ें हम
तो कल क्या रह जाएगा
पुन: साईकिल वाहन ही काम आएगा |

गिरधारी लाल हंसा
उप महाप्रबंधक (भूविज्ञान)

हमारा लड़का इंजीनियर है

श्रीमान बात बड़ी क्लियर है,
हमारा लड़का इंजीनियर है |
देखिए साहब हमनें उसे पढ़ाया लिखाया है,
हज़ारों रुपए लगाकर इंजीनियर बनाया है |
हर साल की ड्रेस, फीस, किताबों, का कुल खर्च
लगभग पांच लाख आता है,
जिसका सीधा संबंध दहेज से जुड़ जाता है |
हम आपकी लड़की को गृह लक्ष्मी तो अवश्य बनाएँगे,
किन्तु क्या आप पांच लाख दे पाएंगे ?
अब तक मौन बैठे लड़की के पिता ने मौन तोड़ा
और एक भाव पूर्ण तीर छोड़ा |
बोला : श्रीमान आपकी बड़ी मेहरबानी,
यह लक्ष्मी तो आनी जानी |
मैं आपकी सुंदर भावनाओं का सम्मान करता हूँ
अतः प्रस्ताव पांच की जगह पांच लाख पचास हज़ार रखता हूँ,
क्योंकि एक दिन आपका लड़का स्वर्गवासी हो जाएगा
क्या क्रियाकर्म का खर्चा पड़ोसी उठाएगा ?
नहीं-नहीं यह पचास हज़ार उस वक्त काम आएगा |
फिर एकाएक लड़की के पिता का चेहरा हो गया लाल,
वह उठा और अपने नौकर को बुला लिया तत्काल |
कहा, इन महाशय को बाहर का रास्ता दिखला दो
ताकि ये दहेज-दानव दौड़ता-2 हिंदुस्तान की सीमा से बहुत दूर चला जाए,
ताकि किसी अन्य घर में घुसकर दहेज की मांग न लगाए,
किसी असहाय मासूम ललना की मृत्यु का कारण न बन जाए |

नेहा बाजपेयी
वरिष्ठ भूविज्ञानी

ज़िन्दगी

कभी गम, तो कभी ख़ुशी है ज़िन्दगी
कभी धूप, तो कभी छाँव है ज़िन्दगी
विधाता ने जो दिया, इक अदभुत उपहार है ज़िन्दगी
कुदरत ने जो धरती पर बिखेरा वो प्यार है ज़िन्दगी
जिससे हर रोज़ नए-नए सबक मिलते हैं
यथार्थों का अनुभव कराने वाली ऐसी कड़ी है ज़िन्दगी
जिसे कोई न समझ सके ऐसी पहेली है ज़िन्दगी
कभी तन्हाइयों में हमारी सहेली है ज़िन्दगी
अपने-अपने कर्मों के आधार पर मिलती है ये ज़िन्दगी
कभी सपनों की भीड़, तो कभी अकेली है ज़िन्दगी
जो समय के साथ बदलती रहे, वो संस्कृति है ज़िन्दगी
खट्टी-मीठी यादों की स्मृति है ज़िन्दगी
कोई न जानकर भी जान लेता है सब कुछ ऐसी है ज़िन्दगी
तो किसी के लिए उलझी हुई पहेली है ज़िन्दगी
जो हर पल नदी की तरह बहती रहे, ऐसी है ज़िन्दगी
जो पल-पल चलती रहे, ऐसी है ज़िन्दगी
कोई हर परिस्थिति में रो-रोकर गुजारता है ज़िन्दगी
तो किसी के लिए गम में भी मुस्कुराने का हौंसला है ज़िन्दगी
कभी उगता सूरज, तो कभी अंधेरी निशा है ज़िन्दगी
ईश्वर का दिया, माँ से मिला अनमोल उपहार है ज़िन्दगी
तो तुम यूँ ही न बिताओ अपनी ज़िन्दगी
दूसरों से हटकर तुम बनाओ अपनी ज़िन्दगी
दुनिया के शोर में न खो जाए तुम्हारी ये ज़िन्दगी
ज़िन्दगी भी तुम्हें देखकर मुस्कुराए, ऐसी बिताओ तुम ज़िन्दगी

दीपाली बिंद्रा
मानव संसाधन एवं प्रशासन अनुभाग

मोटापे की मारी मैं बेचारी

माथा तो ठनका जब हमारा
बाज़ार में लोगों ने बहिन जी
न बुला माताजी कह कर पुकारा
यह तमाचा तो हमें लगा बड़ा करारा |

सोचा फिजूल खर्चे किए बाल रंगने में, पार्लर जाने में
नए फैशन के कपड़े पहनने में
मन में एक उदासी सी छा गई
तन में तो जैसे आग लग गई |

बच्चों ने, पति ने, बहुत समझाया
तुम्हारा भ्रम है, कह के फुसलाया
परन्तु अंत में यह निष्कर्ष निकल कर आया
हमारे मोटापे को ही कारण बतलाया |

ठान ली हमने पतले होने की, जिम जाने लगे
परन्तु जब जिम का भी असर नज़र न आया
तो इश्तहार देख कर डाइटीशियन का नंबर मिलाया
डाइटीशियन ने तो मीठे और घी को ज़हर बताया |

अब कहीं शादी पार्टी में जाने को जी नहीं करता था
औरों की प्लेट देख कर ही पेट भरना पड़ता था
घर की तो छोड़ो आफत तो ऑफिस में भी थी
क्योंकि यहाँ हर मीटिंग पार्टी में मिठाई और समोसा जो मिलता था |

मन मसोस कर सब कुछ सहा
पतले होने की आस में किसी से कुछ नहीं कहा
परन्तु जब जिम और डाइटीशियन का बिल कटा
तो दो - चार किलो वज़न वैसे ही घटा |

अब और पैसे देने की हिम्मत न थी
मन पर संयम की दिक्कत हो रही थी
सोचा आधे से ज़्यादा ज़िन्दगी गुज़ार दी जदो जेहद में
बाकि की न गुजारेंगे खाने की किल्लत में

इसलिए आज इस हास्य कविता प्रतियोगिता में, मुझे इनाम मिले न मिले
परन्तु मिठाई और पकोड़ा ज़रूर मिले
जब तक मन जवान है, मुहं में मीठी ज़ुबान है
दिल में अरमान हैं तो हम भी तीर कमान हैं |

अनीता अगनानी,
मुख्य प्रबंधक (वित्त)

माँ की गोद

माँ, मैं फिर से तेरी गोद में सोना चाहता हूँ,
ये दुनिया मेरी समझ में नहीं आती,
तेरी थपकियां ही बहुत थीं,
मैं बेफिक्र सो जाता था |

तेरे आँचल की छांव में सुकून था,
बेचैनी यहाँ थोक के भाव मिलती,
हर कोई माँ की बात करता,
पर माँ के प्यार से सींचा दिल कहीं न दिखता |

कैसा हो गया ये समाज,
अंधी दौड़ में जज़्बात कौड़ियों के भाव बिकता,
माँ मुझे बुला ले अपने पास,
चेहरे समझ में न आते मुझे,
तेरी लोरियों के पात्र ही सच्चे थे,
हम मासूम तेरी गोद में ही अच्छे थे |

आनंद प्रकाश
भूभौतिकीविद

उड़ान

अठहतर ही हुए अभी हैं

शतक बनाना शेष अभी है

किए कई है शिखरारोहण

फिर भी आगे ऊँचे-ऊँचे

शिखर और भी शीश उठाएं

चिर आमंत्रण की मुद्रा में खड़े अभी हैं,

नहीं उम्र को गिना वर्ष से

गिनता केवल गया उन्हें जो

सखा बंधु सब मिले मार्ग में

यादें जिनकी अंतर्मन में |

अठहतर ही हुए अभी हैं

शतक बनाना शेष अभी है |

कविता वत्स
डी.जी. सेल

जीवन चक्र-एक सांसारिक खेल

एक नन्हा बीज धरा के अंदर, शक्ति से बना विशाल तरुवर
ऐसे अनेक पेड़ों ने रहकर, अचल शांत और निःस्वर
जीवन का हर रूप निखारा, रखकर सारी पीड़ा अंदर
ऐसी दानवीर प्रकृति ने, मानव जाति को पनपाया है
यह संसार की कैसी माया है, शक्ति को भीतर समाया है|

इन्ही वृक्षों को काट मार, बनाए भवन, दौड़ाई गाड़ियाँ
जल थल और नभ में, प्रदूषण से बन पड़ी विपतियाँ
परिणामस्वरूप जीवन बीमार, दवा, डाक्टर, ऑक्सीजन मास्क से लाचार
फिर भी कहते यही कि जग यह, विकसित होता आया है
संसार की कैसी माया है, स्वार्थ मति पर छाया है|

प्रकृति एक महाविद्यालय, परिवार सबसे बड़ा एक स्कूल
माता-पिता के आँगन का, मैं एक स्नेह से पोषित फूल
"प्रथम उद्देश्य सिर्फ विद्याअर्चन, बाकी सब जाओ तुम भूल
खेलो कूदो मस्त रहो पर, यह नहीं कभी भुलाना है"
तुम्हें एक दिन प्यारी बिटिया, स्वावलम्बी होकर दिखाना है"
संतानों को सब दे कर भी, पालनकर्ता कब संतोष पाया है
संसार की कैसी माया है, प्रेम स्नेह से भर आया है|

अब किचन, स्कूल, ऑफिस और बाज़ारों के ही फेरे हैं
वहाँ कहीं मम्मी पापा, राह तकते दोनों अकेले हैं
"ओ पापा काम है बहुत मुझे, बाद में बात करती हूँ"
वो बाद कभी आता ही नहीं, बस छूटी (मिस्ड) कालें गिना करती हूँ
लेकिन जब भी सुनते मुझे, मुख उनका खिलखिलाया है
किसी शिकायत बिना, मेरा कुशल मंगल मनाया है
संसार की कैसी माया है, निश्चल प्रेम समाया है|

देखिये जीवन चक्र का खेल, आज मुझे वहीं ला खड़ा किया
एक छोटे से बालक ने, मेरे अस्तित्व को आकार दिया
आज सोचती हूँ तुम पर 'मनन', अपना सर्वस्व न्योछावर कर दूँ
तुम रहो सुखी और स्वस्थ सदा, तकलीफ़ें सारी मैं हर लूँ
निःस्वार्थ होने की परिभाषा, मुझे आज समझ में आई है
जब मम्मी पापा के प्रेम की, तुम में दिखती परछाई है
प्रकृति हो या परिवार, देते हैं लालन पालन और स्नेह अपार
वात्सल्य डोर से समय का पहिया, आगे बढ़ता आया है
संसार की ऐसी माया है, जो आज है वो कल का साया है|

हे प्रभु ! आज दो दान मुझे, वो संयम, धीरज और ध्यान मिले
जिससे निज नौनिहाल को मैं, सुयोग्य बना सुशील करूँ
पर साथ ही अपने परिजनों की, सेवा में कमी न रह जाए
व्यस्त भले कितनी हूँ उनका, ध्यान न कम होने पाए
अपनी धरती माता का भी मैं, मान करूँ, सम्मान करूँ
कम करू यथासंभव प्रदूषण, पौधों का रोपण प्रति साल करूँ
इसी भावना के पालन को, जीवन ध्येय बनाया है
संसार की ही ऐसी माया है सुधार को उद्देश्य बनाया है|

ऋचा चौहान
वरिष्ठ भौमिकीविज्ञ

भ्रष्टाचार

प्यारा भारत देश हमारा,
देशहित हो लक्ष्य हमारा |

भ्रष्टाचार का हो मुंह काला,
सतर्कता का हो उजियारा |

सत्यनिष्ठा हो प्रण हमारा,
जन-जन तक पहुंचे यह नारा |

जवाबदेही तय हो सबकी,
सबका जीवन हो सुखियारा |

अपने देश का मान बढ़ाएं,
कार्य में अपने पारदर्शिता लाएं |

स्वार्थ रहित हो सेवा अपनी,
राष्ट्र हित में करते जाएं |

एच. के. आनंद
मुख्य रसायनज्ञ

बेरंग जिंदगी

जिंदगी की धारा नाव की तरह बहने लगी,
अब ये कयामत सी लगने लगी |
हुई बेरंग, लगने लगे सब एक से रंग,
अब जीने का न था कोई ढंग |

इस नीरस प्रवाह में स्वत: ही लगी डुबकी,
सब वीरान सा नज़र आने लगा |
सब अनुचित लगता था अब,
आशाओं का फूल मुरझाने लगा |

देखकर अंधेरा खुशियों से मुंह मोड़ लिया,
ज्वालामुखी सा फूटा अंतर्मन में, तो जग से नाता तोड़ लिया |

धैर्य, करुणा, प्यार सब छलावा सा लगने लगा था,
अविश्वास का तो मानो, घर ही मन में बनने लगा था |

एक आस दिल में है, इस जहां से गुम हो जाऊं,
कोई छोर नहीं दिख रहा, मंजिल का पता भला कैसे पाऊं |

दर्द लेकर आखिर कब तक जिया जाएगा,
एक दिन हर इन्सां आखिर इस दुनिया से रुखसत हो जाएगा |
इसलिए करो सदकर्म, जिंदगी में प्यार और खुशियों के रंग भरो,
तो इस जहां के साथ अगला जहां भी रंगीन हो जाएगा |

कपिल खेड़ा
आर.टी.आई. एवं हिंदी अनुभाग

इन्सानियत

ज़रूरी नहीं है फरिश्ता होना,
इंसान का काफी है इंसान होना ||

हकीकत जमाने को अब रास नहीं आती,
एक गुनाह सा हो गया है आईना होना ||

बाद में तो कारवां बनते जाते हैं,
बहुत मुश्किल है लेकिन पहला होना ||

हवाओं के थपेड़े झेलने पड़ते है ऊँचाई पे,
तुम खेल समझ रहे हो परिंदा होना ||

ये लोग जीते जी मरे जा रहे हैं,
मैं चाहती हूँ मौत से पहले ज़िंदा होना ||

अपनी गलतियों पे भी नज़रें झुकती नहीं अब,
लोग भूलने लगे हैं शर्मिंदा होना ||

विशाखा गुप्ता
वरिष्ठ भूभौतिकीविद

तुम

मैं अकेला था कहाँ, अपने सफ़र में
साथ मेरे छांव बन चलती रहीं तुम।

तुम हो जैसे चांदनी है, चंद्रमा में, आब मोती में, प्रणय आराधना में
चाहता है कौन मंजिल तक पहुँचना, जब मिले आनंद पथ की साधना में।
जन्म जन्मों में जला एकांत घर में
और बाहर मौन बन जलती रहीं तुम।

मैं चला था पर्वतों के पार जाने, चेतना के बीज धरती पर उगाने
छू गए लेकिन मुझे हर बार गहरे, मील के पत्थर विदा देते अजाने

मैं दीया बन कर तमस से लड़ रहा था
ताप में बन हिमशिला, गलती रहीं तुम।

रह नहीं पाए, कभी हम थके हारे, प्यास मेरी ले गए हर, सिंधु खारे
राह जीवन की कठिन, कांटों भरी थी काट दी दो-चार सुधियों के सहारे|

सो गया मैं, हो थकन की नींद के वश
और मेरे स्वप्न में पलती रहीं तुम।

मेरा वजूद, मेरा जमीर, मेरी ही पहचान हो तुम, मेरा धर्म, मेरा कर्म और मेरा ही ईमान हो तुम
एक आस और एक अहसास हो, तुम एक दुआ भी हो और एक फरियाद भी हो तुम|

जीवन के इस सफर में मेरा जुनून, मेरा सुकून
बस एक, तुम बस एक, तुम मेरी जिन्दगी हो सिर्फ तुम।

राम बाबू सिंह
मुख्य भूभौतिकीविद (एस)

ताकत

ताकत ये नहीं कि किसी को उड़ा दो, मार दो,
ताकत तो ये है जब किसी को अपना बना लो,
मोहब्बत है उस ताकत का नाम,
कभी आज़मा के तो देखो सरकार |
क्यों इन रंजिशों में फंसे हो,
किसी के दुःख को बांट डालो,
रंज तो उस रंजिश की वजह से हो,
जो बेरंग करती इस रंगीन दुनिया को |

उन मासूमों को मारकर क्या मिला,
कहां से लाए इतनी नफरत,
कि लहू बहाने को समझ बैठे शोहरत,
क्या कभी उस खुदा ने तुमसे ये कहा था,
ले लो जान, वो तेरे साथ है ?

खून का रिश्ता भले ही न हो,
पर खून का रंग तो लाल है |

ब्रजेश कुमार पाण्डेय
(एन.डी.आर. अनुभाग)

हिंदी दिवस

वैसे तो सब अच्छा है, न जाने क्यों,
हिंदी के प्रति प्यार आज भी कच्चा है |

साफ, सरल, सच्चाई है, इसकी देन,
फिर वो हिंदी भाषा हो या हो रंग सफ़ेद |

हर वर्ष पखवाड़ा करवाना, ये है संविधान की देन,
नहीं तो हिंदी कहां, अँग्रेजी से है सबको प्रेम |

सितंबर के महीने में, यह पखवाड़ा, एक त्योहार की तरह आता है,
और जाते-जाते, सबके दिलों मे एक उम्मीद भर जाता है |

इसके आने की तैयारियाँ, बड़े ही धूम-धाम से होती हैं,
बैनर, पोस्टर, कवि-सम्मेलन और प्रतियोगिताएं भी होती हैं |

हर वर्ष प्रतिज्ञा हम लेते हैं, हिंदी को जीवंत बनाएँगे,
व्यवहार, काम और भाषा में, हिंदी को हम अपनाएँगे |

पखवाड़ा जैसे ही ख़त्म हुआ, सबने मन में आराम किया,
आनंद, मौज और मस्ती में, यह त्योहार भी निकल गया |

दुख और पीड़ा, से भरी यह गाथा है,
कि न जाने क्यों, ये पखवाड़ा आता है |

बस मन समझाने की खातिर, हम हिंदी दिवस मनाते हैं,
हिंदी को ही है अपनाना, यह कहकर दिल बहलाते हैं |

आँखों मे आँसू मत रखना, करने की अभिलाषा रखना
निज कलम और अधरों पर बस केवल हिंदी भाषा रखना |

भारत मे जब हर कागज़ पर, हिंदी में लिखा जाएगा,
उस दिन ही हर भारतवासी, प्रतिदिन हिंदी दिवस मनाएगा |

फिर से आवाज़ लगाता हूँ, नवयुग की आशा हो हिंदी
बस केवल यही पुकार मेरी, जन-जन की भाषा हो हिंदी |

पाली गुप्ता
(पी.एस.सी. अनुभाग)

इन्द्र तू क्यों रूठ गया

माना कि इन्द्रप्रस्थ यह नहीं रही,धर्मराज की भूमि नहीं रही,
प्यार का वातावरण है ख़त्म हो चला, नफरत की आंधी चल रही |

नेताओं की दादागिरी, कर्ताओं की उठाईगिरी,
चुपचाप जनता सह रही, डर के मारे दुबक रही |

दुबक बैठा तू भी इन्द्र, चुपचाप तमाशा देख रहा |
नेताओं की भांति, रोती जनता से, तू क्यों नाता तोड़ रहा |

क्या मंहगाई की तरह, तुम्हारा मोल भी बढ़ रहा |
रिश्वत की हांडी पक रही, बेख़ौफ़ दानव घूम रहा |

तरसती हैं बालाएं, सावन के गीत गाने को |
सूने पड़े हैं पेड़, झूले यूं डलवाने को |

हवा मांग रही खुशबू, समोसे और पकौड़ों की |
बच्चे तरस रहे यूं, कागज़ की नाव खेने को |

इन्द्र जी का उत्तर:
तुमने जो कंजूसी की वृक्षों में, मैंने भी पानी का कोटा काट लिया |
तुमने जैसा बर्ताव किया, वैसा ही फल प्राप्त किया |

गर चाहिए पानी मुझसे, तुम भी तो कोई काम करो |
वृक्षोंको देकर जीवन दान, तुम अपना भी उद्धार करो |

अनिता वशिष्ट
राजभाषा परामर्शदाता

एक और दामिनी

मैं जन्मा एक लड़का सा,
कुदरत ने मुझे शारीरिक मजबूती प्रदान की,
समाज ने मुझे मजबूत पुरूषवादी सोच दी,
शिक्षा ने मेरा पोषण किया,
माँ ने ही मेरा चरित्र निर्माण किया,
समाज में शिक्षा ने बदलाव लाया,
स्त्री-पुरूष के भेद को भी काफी हद तक मिटाया,
पर पुरुषों का पुरुषार्थ कहीं खो गया,
फौजी जवानों के हिस्से ही बचा रह गया |

हर रोज यहां असमत लूटी जा रही,
नारी के जितने रुप,
उतने ही तरीके से उसकी आबरू लूटी जा रही,
पहले तो गर्भ में ही भ्रूण की हत्या हो जाती,
अब तो निर्बोध की चमड़ी क्रूर दानवों के हत्थे चढ़ जाती।
कहने को तो बेटी थी,
पर उन हब्शियों के लिए एक भोग की वस्तु सी थी,
तिल-तिल वो मरती रही,
आँखों के सामने ही अपना दम तोड़ती रही,
आत्मा तक कोई ऐसे प्रतिघात करेगा ,
सीने पे चढ़ कोई ऐसे मर्द बनेगा,
सोचा न था !
भैया भी कहा, चाचा भी कहा,
पर उनको मेरे पंखो को काटने की जल्दी थी,
वो घिनौनी हँसी मेरे मन पे कुल्हाड़ी सा वार करती,
क्षत विक्षत कर डाला पापियों ने,
आह ! ईश्वर ऐसे वक़्त में भी तू कैसे मौन रह गया |

उन दरिंदो को भी ,
किसी मां ने पूरी ममता दी थी,
किसी बहन ने उनकी सूनी कलाइयों में अपना मान दिया था,
किसी पत्नी ने विश्वास किया था,
किसी बेटी ने निर्भय हो, स्वावलंबी होने का ख्वाब देखा था,
जब वो वहशी हो, किसी की असमत लूट रहे थे |
क्या तुम्हें, लज़्ज़ा नहीं आई ?
क्या तुम्हारी आत्मा ने शोर नहीं किया ?
उसकी चीखों से क्या तुम्हारा हृदय नहीं फटा,
अगर तुमने एक क्षण के लिए भी अपने परिवार की किसी महिला का चेहरा सोचा होता,
तो अगले ही क्षण, तुम पागल हो जाते,
शरीर की जलन तो सबने देखी है,
आत्मा का जलना, तुम महसूस करते,
अपने कृत्य पे, कहीं जा मरते।

पर शायद तुम मानव नहीं हो,
वरना आत्मा के दमन का दर्द समझते।

ये कैसा डर है ,
कि कोई आवाज नहीं उठा रहा,
दरिदों का पता है,
पर सब मौन हैं,
वो भी मौन हो गई है ,
क्योंकि यहां का हर लड़का डरता है।
उनकी चीखें मुझे बेचैन कर रही,
जब उनमें मुझे अपनी बहन दिखी,
वो भी तो अकेली है,
शायद कोई दरिंदा वहां आस पास हो।
वो अनजाना डर मुझे बेचैन कर देता,
मुझे उन दरिंदों की आहट आती है,
सभ्य समाज के असभ्य पुरुषों का यह हृदयविदारक कृत्य ,
मैं आहत हूं !
पुरुष के पौरुष का ये लिचंड रुप ,
घिन आती है मुझे।

पर ये लड़का कमजोर नहीं,
लड़ूंगा उनके न्याय के लिए ,
कोशिश भयमुक्त समाज के लिए आज से ही करुंगा ,
हम जिनसे हैं ,
उनमें फिर से वही विश्वास लाऊंगा ,
अगर वो सुधरे तो ठीक ,
वरना उन दरिंदों का गला रेत आऊंगा ,
पर नपुंसक की भांति अब और चुप नहीं रह पाऊंगा |

आनंद प्रकाश
भूभौतिकीविद

सुनहरे निशां

कभी साथ चलो, हाथों मे हाथ लिए।
कभी थम जाओ, चाहत की छाँव तले।
कभी नज़रों से बात करो, मुस्कुराते हुए।
कभी खामोश रहो, गुनगुनाते हुए॥

तुम जहाँ रुको, मेरी मंज़िल भी होगी वहाँ।
तुम जिस मोड़ से मुड़ जाओ, मुझे वहीं पाओगे सदा।
तुम्हारे कदमों के सुनहरे निशां, मुझे दे ही देते हैं तुम्हारा पता।
मुझे मोहब्बत है तुम से, जरा तुम भी तो कर के देख लो ये खूबसूरत खता॥

मेरी नजरे तुम्हें देखती हैं, मेरे लफ्ज खामोश रह जाते हैं।
लबों के दायरों में सिमटकर वो, तेरी शोखियों से मदहोश हो जाते हैं।
अपनेपन का ऐसा कुछ एहसास है, दूर होकर भी वो आस-पास है।
दिल बड़ा मायूस और उदास है, तुमसे मिलना है ये ही अब आस है॥

वीना अरोड़ा
अनुबंध वित्त अनुभाग

बुद्धिमत्ता

एक दिन एक व्यक्ति ने भोजन चुराया और वह पकड़ा गया। राजा ने उसे इस गलती के लिए फांसी पर लटकाने का आदेश दे दिया। फांसी पर लटकने से पहले जब उसकी अंतिम इच्छा पूछी गई तो उस व्यक्ति ने कहा कि 'महाराज, मैं एक ऐसा सेब का बीज बो सकता हूं जो एक ही दिन में विशाल पेड़ बन जाएगा और फल देने लगेगा। यह कला मुझे मेरे पिता ने सिखाई थी, पर अब मेरे मरने के बाद यह कला भी समाप्त हो जाएगी।

राजा हैरान हुआ और उसने उसे वह सेब का पेड़ उगाने की इजाजत दे दी। उस व्यक्ति ने एक गड्ढा खोदा और कहा, 'महाराज, पेड़ वही व्यक्ति उगा सकता है जिसने आज तक कभी कोई चोरी न की हो, पर मैं तो अब चोर साबित हो चुका हूं। जाहिर है, अब मैं इसे नहीं उगा सकता। इसे वही व्यक्ति उगा सकता है, जिसने कभी वो चीज न ली हो जो उसकी अपनी न हो।'

यह सुनकर राजा ने अपने मंत्री को वह पेड़ उगाने का आदेश दिया। मंत्री हिचकिचाते हुए बोला, महाराज, जब मैं युवक था तब मैंने किसी की एक चीज चुराई थी, इसलिए मैं भी इसे नहीं उगा सकता।' राजा ने सेनापति को आदेश दिया तो उसने भी क्षमा मांगते हुए कहा, महाराज, मैंने भी एक बार अपने पिता के पैसे चुराए थे। इसलिए मैं भी इसे नहीं उगा सकता।' अब स्वयं राजा की बारी आई, लेकिन उसे भी याद आ गया कि बचपन में उसने भी अपने पिता की एक कीमती चीज चुराई थी|

अंत में चोर ने उन सभी से कहा, आप सभी श्रेष्ठ और समर्थ हैं, आपके पास सब कुछ है, फिर भी आप यह पेड़ नहीं उगा सकते। लेकिन मैं, जिसने खुद को जिंदा रखने के लिए भोजन चुरा लिया, उसे आप प्राणदंड दे रहे हैं। राजा ने उस व्यक्ति की बुद्धिमत्ता की सराहना की और उसे क्षमा कर दिया।

दिलीप कुमार
सी.बी.एम. अनुभाग

नए साल का तोहफा

एक दिन एक बच्चा पालतू जानवरों की दुकान पर एक पिल्ला खरीदने गया। वहाँ चार पिल्ले एक लाइन से बैठे हुए थे। उनमें प्रत्येक की कीमत 50 डॉलर थी। लेकिन एक पिल्ला कोने में अकेला बैठा हुआ था। बच्चे ने पूछा, 'क्या वह भी बिकाऊ है और अकेला क्यों बैठा हुआ है? दुकानदार ने जवाब दिया, 'वह उन्हीं में से एक है, लेकिन अपाहिज है और बिकाऊ नहीं है। बच्चे ने पूछा, 'उसमें क्या कमी है ? दुकानदार ने कहा, 'इस पिल्ले की एक टांग खराब है। बच्चे ने पूछा, 'फिर आप इसके साथ क्या करोगे? जवाब था, 'इसे हमेशा के लिए सुला दिया जाएगा। बच्चे ने पूछा, 'क्या मैं उस पिल्ले के साथ खेल सकता हूँ ? दुकानदार ने कहा, 'हां, बिल्कुल। बच्चे ने उस पिल्ले को उठाया और वह पिल्ला उसके कान चाटने लगा। उसी समय बच्चे ने तय किया कि वह उसी पिल्ले को खरीदेगा। दुकानदार ने उससे कहा, 'पर यह पिल्ला बिकाऊ नहीं है।

लेकिन बच्चा उसे खरीदने की ज़िद पर अड़ा रहा। आखिरकार दुकानदार उसे 50 डॉलर में वह पिल्ला बेचने को राजी हो गया। बच्चे ने जेब से दो डॉलर निकाले और बाकी के 48 डॉलर माँ से लेने दौड़ा। जैसे ही डॉलर लेकर वह दुकान पर लौटा, दुकानदार ने उससे फिर से कहा, मेरी समझ में नहीं आया, आखिर तुम इस अपाहिज पिल्ले के लिए इतने डॉलर क्यों खर्च कर रहे हो जबकि तुम इसी कीमत में एक अच्छा पिल्ला खरीद सकते हो? बच्चे ने एक शब्द भी नहीं कहा। उसने अपने बाए पैर से पैंट उठाई। उसकी कृत्रिम टांग दिखने लगी। यह देख कर दुकानदार ने कहा, 'मैं तुम्हारे दर्द और इस मूक प्राणी की पीड़ा को समझ सकता हूँ। तुम्हारी भावना और प्यार की कद्र करता हूँ। तुम इस पिल्ले को मुफ्त में ही ले जा सकते हो। यह मेरी ओर से तुम्हारे लिए नए साल का तोहफा है।

कुलदीप कुमार
पी.एस.सी. अनुभाग

शब्द

एक किसान की एक दिन किसी बात पर अपने पड़ोसी से खूब जमकर लड़ाई हुई और उसने उसे काफी खरी-खोटी सुनाई | बाद में जब उसे अपनी गलती का एहसास हुआ, तो उसे खुद शर्म आई | वह इतना शर्मसार हुआ कि वह एक साधु के पास जा पहुंचा और पूछा, " मैं अपनी गलती का प्रायश्चित करना चाहता हूँ | "साधु ने कहा कि पंखों से भरा एक थैला लाओ और उसे शहर के बीचों-बीच उड़ा दो | किसान ने ठीक वैसा ही किया जैसा कि साधु ने उससे कहा था और फिर किसान साधु के पास लौट आया | लौटने पर साधु ने उससे कहा, "अब आओ और जितने भी पंख पड़े हैं उन्हें बटोर कर थैले में भर लाओ|" नादान किसान जब वैसा करने पहुँचा तो उसे मालूम हुआ कि यह काम मुश्किल ही नहीं असंभव भी है | खैर, खाली थैला ले वह वापस साधु के पास आ गया | यह देख साधु ने उससे कहा, "जिस प्रकार ये बिखरे पंख समेटे नहीं जा सकते उसी प्रकार मुख से निकले शब्द भी वापिस नहीं आ सकते |

"शब्द ही ऐसी चीज है जिसकी वजह से

इंसान या तो दिल में उतर जाता है

या फिर दिल से ही उतर जाता है |"

नीलम सचान
जी.डी.ए. अनुभाग

भगवान है

रज्जो जल्दी-जल्दी बर्तन साफ करते हुए सोच रही थी कि बर्तन साफ करने के बाद आज मालकिन से कुछ रुपए एडवांस लेगी | बच्चे कई दिनों से खाने में सिर्फ नमकीन चावल ही खा रहे थे क्योंकि सब्जी और दाल के पैसे नहीं थे कि अचानक मालकिन ने आवाज़ देकर कहा कि मैं शॉपिंग के लिए जा रही हूँ, रज्जो ने जल्दी से कहा कि मालकिन कुछ एडवांस चाहिए तो मालकिन बोली कि साहब दो दिन के लिए बाहर गए हैं जब वापिस आएंगे तो ले लेना | काम समाप्त करके रज्जो घर को वापिस जाते समय बच्चों के बारे में सोच रही थी कि आज फिर से नमकीन चावल खाना पड़ेगा | तभी दूर से आवाज़ सुनाई दी कि माता का भंडारा है, आप आकर प्रसाद ग्रहण कीजिए | रज्जो भगवन को धन्यवाद देती हुई उसी दिशा में चल दी |

रुपेश कुमार
जी.डी.ए. अनुभाग

सूरज की कहानी (बाल मुख)

"पापा, आज आउल (उल्लू) वाली स्टोरी सुनाओ।", 4 वर्ष के शुभ ने सोने से पहले मुझसे कहा।

रात को सोने से पहले शुभ अक्सर मुझसे कहानी सुनने की ज़िद करता, लेकिन 5 दिन से एक ही कहानी सुना-सुना कर मैं बोर हो गया था। आज फिर वो अपनी रंग-बिरंगी चित्रों वाली किताब से सुनाने की ज़िद कर रहा था।

टालने के लिए मैंने कहा ," पापा तो तुम्हें रोज़ कहानियां सुनाते हैं, आज रात तुम पापा को कोई कहानी सुनाओ। "

"मैं ???" शुभ ने कौतुहल वश पूछा। शायद, उसे लगा नहीं कि उससे भी कहानी सुनी जा सकती है।

"हाँ।" मैंने कहा।

"कौन सी??" शुभ ने फिर पूछा। वह तय नहीं कर पा रहा था कि पापा को क्या सुनाऊँ।

"कोई सी भी।", मैंने फिर जवाब दिया।

"सन (सूरज) वाली स्टोरी सुनाऊँ??" मैंने तो टालने के लिए कह दिया था, लेकिन अब मेरी भी रूचि यह जानने के लिए उत्सुक हो रही थी कि बालमन से सूरज की कौन सी कहानी निकल कर आती है?

मेरे हाँ कहने पर उसने कहानी शुरू की।

शुभ: " एक सन था।" (फिर कुछ देर सोचने के बाद) .... सन बहुत स्ट्रांग (Strong) था।"

मैं : हाँ , फिर ??

शुभ : " सन दिन में बाहर खेलने गया।"

"फिर ?" अब मेरी रूचि बढ़ने लगी थी। कुछ देर सोचने के बाद शुभ ने फिर शुरू किया।

"सन फ्रेंड्स के साथ खेल रहा था, फिर रेन (बारिश) आई।

"बारिश आई ??" मैंने पुष्टि की।

"हाँ, ……..तुम मत बोलो।", मेरे पूछने से उसकी कहानी में व्यवधान आया था। फिर उसने अपनी कहानी जारी रखी।

“रेन (Rain) में सन के सारे फ्रेंड्स भींग गए।"

"अच्छा फिर ??" बहुत मुश्किल से मैंने अपनी हंसी रोकी।

फिर सन (सूरज) की मम्मी ने सन को वापस बुलाया। बारिश के कारण सन आच्छु - आच्छु करने लगा (छींकने लगा)।

फिर घर में मम्मी ने सन को टॉवल से वाइप (wipe) किया…………और सन को सूप पीने को दिया।

"फिर क्या हुवा?" आगे की कहानी जानने के लिए मैं भी उत्सुक था।

फिर सूप पी के सन स्ट्रांग हो गया। वो बाहर गया और रेन (Rain) को पिटी - पिटी (मारा) किया। रेन (Rain) भाग गई। सन अपने फ्रेंड्स के साथ फिर बाहर खेलने लगा। फिर सारे हैप्पी हो गए।

और इधर मैं सोच रहा था कि सूरज की एक कहानी ऐसी भी हो सकती है। "वाह !!! बहुत अच्छी स्टोरी है।" , यह बोल कर मैं उसे सुलाने लगा।

आलोक कुमार,
अधीक्षक अभियंता (आगार)

तनाव कैसे दूर करें ?

प्रत्येक व्यक्ति की ज़िन्दगी में कभी न कभी तनाव अवश्य आता है | कभी ये कुछ घंटों के लिए आता है तो कभी ये महीनों तक हमारे पीछे लगा रहता है |

इस संबंध में मैं अपनी ही लिखी चीज़ों के बारे में सोचने लगी | उसके अलावा मैंने कुछ और तरीके भी अपनाए ताकि जल्दी से तनाव मुक्त हो सकूं | मैं आपको ऐसे ही कुछ उपायों से अवगत करा रही हूँ जिनसे मुझे तनाव दूर करने में फायदा हुआ :-

1) अपने तनाव के बारे में अपने किसी करीबी से अवश्य चर्चा करें

किसी ऐसे व्यक्ति से जो आपके साथ समानुभूति रखता हो, मैंने अपनी बात अपनी दोस्त से कही या ये कहें कि वो खुद ही समझ गई | आप भी अपने जीवन साथी, माता-पिता या किसी मित्र से अपनी बात कह सकते हैं | बस इतना ध्यान रखिए कि आपने उस व्यक्ति को बखूबी परखा हुआ हो, जिस पर आप आँख मूँद कर भरोसा कर सकते हों | जब आप ऐसा करेंगे तो आपका मन हल्का होगा और चूँकि सामने वाला आपके साथ उतना ही जुड़ा हुआ होगा और वो भी आपको तनाव मुक्त करने में कुछ सहायता कर सकेगा और आप मनोवैज्ञानिक रूप से बेहतर अनुभव करेंगे कि अब आप अकेले नहीं है, कोई है जो आपकी समस्या को समझता है |

2) ऐसे लोगों से बात करें जिससे बात करने में खुशी मिलती हो, मजा आता हो

हमारे जीवन में कई लोग होते हैं जिनसे हमारे बहुत अच्छे रिश्ते होते हैं और हम उन्हें बहुत मानते हैं लेकिन मैं जिन लोगों से बात करने की बात कर रही हूँ वो भले आपकी पसंदीदा सूची में आते हों या नहीं, पर आपको उनसे बात करने में मजा आता हो जिनके साथ आप खिलखिला कर हँस सकते हों | भाग्यवश मेरे पास ऐसे कई मित्र हैं | मैंने झट से ऐसे ही दो दोस्तों को फोन लगाया और खूब जम के हँसी | मैंने उनसे अपनी समस्या की चर्चा नहीं की | बस इधर-उधर की हँसी- मजाक की बातें की | मित्र, ज़ब आप हँसते हैं तो आपका शरीर तनाव के हारमोंस को कम कर देता है जिससे तनाव कम हो जाता है |

3) मन को खुश रखने संबंधी साहित्य पढ़ें

आप इंटरनेट पर सर्च कर के ऐसे कई लेख पढ़ सकते हैं जो आपको खुश रहने के बारे में अच्छी जानकारी दे सकते हैं | मैंने साइकोलोजी टुडे पर कुछ लेख पढ़े जो काफ़ी सहायक थे | इसके अलावा आप आध्यात्मिक लेख, उद्धरण भी पढ़ कर अपना तनाव कम कर सकते हैं और अगर इंटरनेट उपलब्ध नहीं है तो आप संबंधित पत्र-पत्रिकाएं पढ़ सकते हैं या इंटरनेट से प्रिंट लेकर अपने पास रख सकते हैं | दरअसल, पढ़ना हमारे विचारों को परिवर्तित करता है और सारा खेल इन्हीं विचारों का ही तो है |

4) ये समझें कि आप जितना तनावग्रस्त होंगे आपके जीवन में उतनी ही कठिनाइयाँ आएंगी

जैसा कि मैं पहले भी बता चुकी हूँ कि आकर्षण का नियम हर जगह काम करता है | इसलिए हम जितना अधिक दुखी रहते हैं, दुख के बारे में सोचते हैं उतना अधिक ये हमारे जीवन में दिखाई देता है | मुझे ये अच्छे से पता था, मैं जीवन में और तनाव नहीं चाहती थी | इसलिए मैं जान-बूझकर अपने विचारों को सही दिशा में ले जाने की कोशिश कर रही थी और जल्द ही इसका फायदा भी मुझे मिल गया |

5) भगवान से अकेले में बात करें

अगर आप नास्तिक हैं तो बात अलग है, पर यदि आप भगवान को मानते हैं तो उनसे अकेले में बात करें | आप किसी शान्त जगह चले जाएं और भगवान ने आपको जो कुछ दिया है उसके लिए शुक्रिया करें | आप इस बात को समझें कि दुनिया में करोड़ों लोग हैं जो आपसे कहीं बदतर स्थिति में हैं और ईश्वर की कृपा से आपकी स्थिति उनसे बहुत अच्छी है और उससे भी बड़ी बात कि भगवान ने आपको वो सब कुछ दिया है जिससे आप अपने जीवन को और अच्छा बना सकते हैं | अगर आप ध्यान दें तो अक्सर हमारे जीवन में जो तनाव आता है उसकी शुरुआत छोटी होती है लेकिन हम खुद ही उसे अपने नकारात्मक विचारों से पोषित करते जाते हैं और धीरे-धीरे वो बड़ा रूप लेने लगती है |

हमें इस बात को स्वीकार करना होगा कि हमारे तनाव का मुख्य कारण बाह्य नहीं आंतरिक होता है और उसे नियंत्रित करना सिर्फ और सिर्फ हमारे हाथ में है और यकीन जानिए हम अपने थोड़े से प्रयास से बहुत हद तक तनाव मुक्त हो सकते हैं और ऐसा करने के लिए सबसे पहला कदम यही है कि हम तनाव को पालने की बजाए उसे टालने का प्रयास करें। मैंने कुछ महीनों पहले AKC पर एक कहानी भेजी थी | इस कहानी की भी यही सीख है कि -

जीवन की समस्या ऐसी होती हैं कि आप इन्हें कुछ देर तक अपने दिमाग में रखिए और लगेगा की सब कुछ ठीक है | उनके बारे में ज्यादा देर तक सोचिए और आपको पीड़ा होने लगेगी और इन्हें और देर तक अपने दिमाग में रखिए तो ये आपको अशक्त करने लगेंगी और आप कुछ नहीं कर पाएंगे |

इंद्रजीत कौर

वरिष्ठ भूभौतिकीविद

ऊर्जा सुरक्षा एवं ऊर्जा के वैकल्पिक स्त्रोत

आधुनिक युग विज्ञान का युग है | मनुष्य विकास के पथ पर बड़ी तेजी से अग्रसर है | समय के साथ-साथ उसने अपनी सुख-सुविधाओं के सभी साधन एकत्र कर लिए गए है | इतना होने पर भी और अधिक पाने की लालसा में कोई कमी नहीं आई है बल्कि उसमें पहले से भी अधिक वृद्धि हो गई है |

प्रकृति में उपलब्ध संसाधन सीमित है, दूसरे शब्दों में प्रकृति में उपलब्ध ऊर्जा भी सीमित है | आर्थिक विकास की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक ऊर्जा है | समाज के प्रत्येक क्षेत्र, चाहे वह कृषि हो, उद्योग, परिवहन, व्यापार या घर, सभी जगह ऊर्जा की आवश्यकता होती है | विश्व की बढ़ती जनसंख्या के साथ ये आवश्यकताएं भी बढ़ रही हैं | सड़कों पर दिन-प्रतिदिन मोटर-गाड़ियों की संख्या में अतुलनीय वृद्धि हो रही है | रेलगाड़ी हो या हवाई जहाज सभी की संख्या बढ़ रही है | मनुष्य की मशीनों पर निर्भरता धीरे-धीरे बढ़ रही है | इन सभी मशीनों के संचालन के लिए ऊर्जा की आवश्यकता है परंतु जिस गति से ऊर्जा की आवश्यकताएं बढ़ रही हैं, उसे देखते हुए ऊर्जा के समस्त संसाधनों के नष्ट होने की आशंका बढ़ने लगी है, विशेषकर उन साधनों की जिन्हें पुन: निर्मित नहीं किया जा सकता जैसे कि पेट्रोल, डीज़ल, कोयला, एल.पी.जी. आदि |

ऊर्जा के ये सभी स्त्रोत आने वाले तीन-चार दशकों में समाप्त हो जाएंगे | ऐसे में विकट प्रश्न यह है कि आने वाले समय में मानव ऊर्जा की जरुरत कैसे पूरी होगी ? अत: आवश्यक है कि हम ऊर्जा संरक्षण की ओर ध्यान दें |

ऊर्जा संरक्षण क्या है ? ऊर्जा संरक्षण का सही अर्थ है “ऊर्जा के अनावश्यक उपयोग को कम करके ऊर्जा की बचत करना |” इस पर विचार करते हुए भारत में ऊर्जा संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत वर्ष 2001 में ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (बी.ई.ई.) स्थापित किया गया | भारत के लोगों द्वारा ऊर्जा संरक्षण दिवस प्रतिवर्ष 14 दिसम्बर को मनाया जाता है | ऊर्जा संरक्षण की योजना की दिशा में प्रभावशाली परिणाम प्राप्त करने के लिए हर इंसान के व्यवहार में ऊर्जा संरक्षण निहित होना चाहिए |

ऊर्जा संरक्षण के उपाय

1. थर्मल परदे और स्मार्ट खिड़कियाँ ऊर्जा संरक्षण का सबसे बड़ा कारक है |
2. ऊर्जा की एक बड़ी मात्रा को प्राकृतिक रौशनी, सी.एफ.एल., खिडकियों द्वारा प्रकाश की व्यवस्था और सौर लाइट के प्रयोग से बचाया जा सकता है |
3. जल संरक्षण भी ऊर्जा संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है | लोगों द्वारा हर साल हजारों गैलन पानी बर्बाद किया जाता है जिसे जल संरक्षण के उपायों जैसे कम से कम पानी वाले फव्वारों, कम फ्लश वाले शौचालयों, नल जलवाहक एवं खाद शौचालयों का प्रयोग करके बचाया जा सकता है |

अक्षय ऊर्जा : अक्षय ऊर्जा का सृजन प्राकृतिक स्त्रोतों जैसे सूर्य के प्रकाश, पवन, पानी, अपशिष्ट उत्पादों और ऐसे अन्य स्त्रोतों से किया जाता है जिनकी प्राकृतिक रूप से पूर्ति हो जाए | भारत इन स्त्रोतों की अधिकता वाला एक भाग्यशाली देश कहा जा सकता है | अक्षय स्त्रोतों के अन्य लाभ इनका वातावरण अनुकूल एवं अल्प प्रचालन लागत वाला होना है | वर्तमान में अक्षय ऊर्जा स्त्रोत देश की कुल विद्युत् क्षमता का 9 प्रतिशत योगदान देते हैं | इनमें बायोगैस संयंत्र, सौर जल हीटर एवं कूकर, सड़क की लाइटें, पंप, पवन विद्यित जनरेटर, पानी को पंप करने वाली पन्नचक्कियां, बायोमास, गैसीफायर और लघु पनबिजली जनरेटर शामिल हैं | ऊर्जा के इन वैकल्पिक स्त्रोतों के बारे में कुछ जानकारियां इस प्रकार हैं:-

बायोगैस : बायोगैस कार्बनिक उत्पादों, प्राथमिक रूप से पशुओं के गोबर, रसोई अपशिष्ट और कृषि वानिकी उर्पदों से तैयार की जाती है | वर्तमान में बायोगैस उत्पादन में भारत दूसरे स्थान पर है |

बायोमास : बायो मास का उपयोग सभ्यता के आरम्भ से ही किया जा रहा है, इनमें लकड़ी, गन्ने के अवशेष, गेहूं के सरकंडे और पौधों से प्राप्त अन्य सामग्री शामिल है | यह कार्बन उदासीन है और इसके उपयोग से ग्रामीण क्षेत्रों में उल्लेखनीय रोज़गार प्रदान करने की संभाव्यता है | हाल ही में बायो मास विद्युत उत्पादन 1000 करोड़ रुपए से अधिक वार्षिक निवेश आकर्षित करने वाला उद्योग बन गया है जिससे प्रतिवर्ष 9 बिलियन यूनिट से भी अधिक विद्युत का उत्पादन किया जाता है |

सौर ऊर्जा : भारत पर्याप्त धूप वाला देश है जिसके अधिकांश भागों में 250 से 300 धूप वाले दिनों सहित प्रतिदिन 4 से 7 किलोवाट प्रति घंटा सौर विकिरण प्रति वर्ग मीटर प्राप्त होते हैं | इससे सौर ऊर्जा, तापीय एवं विद्युत दोनों ही रूपों में प्रयोग करने का एक आकर्षक विकल्प बन जाती है | प्रकाशवोल्टीय मार्ग में सूर्य के प्रकाश को बिजली में बदला जाता है जिसका उपयोग पम्पिंग, संचार और गैर विद्युतिकृत क्षेत्रों में विद्युत की आपूर्ति के लिए किया जाता है |

अपशिष्ट से ऊर्जा : तीव्र औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और जीवन शैली में बदलाव, जो आर्थिक वृद्धि के साथ आते हैं इससे अपशिष्ट की मात्रा में वृद्धि होती है | इससे हवा और जल प्रदुषण और मौसम परिवर्तन जैसी पर्यावरण संबंधी समस्याएं पैदा होती हैं | शहरी एवं औद्योगिक अपशिष्ट से 3500 मेगावाट तक की ऊर्जा उत्पादन की अनुमानित संभाव्यता है | सरकार द्वारा शहरी अपशिष्ट से ऊर्जा प्राप्ति पर कार्यक्रम का कार्यान्वयन किया जा रहा है |

पवन ऊर्जा : भारत वर्तमान में चीन, अमरीका, और जर्मनी के बाद पवन ऊर्जा के क्षेत्र में चौथा सबसे बड़ा उत्पादक है | पवन ऊर्जा का उपयोग पम्पिंग, बैट्री चार्जिंग और बड़े पैमाने पर विद्युत उत्पादन के लिए किया जाता है | सरकार ने पवन ऊर्जा के आकलन, परियोजनाओं को स्थापित करने और बढ़ावा देने तथा पवन ऊर्जा को देश की बिजली के एक पूरक स्त्रोत के रूप में प्रोत्साहन देने के लिए विद्युत योजना आरंभ की है |

लघु पनबिजली : लघु पनबिजली विद्युत उत्पादन में अक्षय ऊर्जा का सबसे बड़ा स्त्रोत है | यह एक ऊँचाई से गिरने वाले पानी की ऊर्जा से प्राप्त की जाती है जिसे जनरेटर से जुड़े टरबाईन के इस्तेमान से बिजली में बदला जाता है | भारत में 25 मेगावाट तक की शमता वाली पनबिजली परियोजनाओं को लघु पनबिजली परियोजना कहा जाता है | लघु पनबिजली परियोजना आर्थिक रूप से व्यवहार्य है इसलिए निजी क्षेत्रों ने भी इसमें निवेश करना आरम्भ किया है |

हाइड्रोजन ऊर्जा : हाइड्रोजन एक रंगहीन, गंधहीन,स्वादहीन, ज्वलनशील पदार्थ है जिसमें ऊर्जा की मात्रा काफी अधिक होती है | जब इसे जलाया जाता है तो एक उप उत्पादक के रूप में पानी उत्पन्न होता है | इसलिए यह ऊर्जा का एक दक्ष स्त्रोत है और पर्यावरण की दृष्टि से स्वच्छ ईंधन है | इसका इस्तेमाल विद्युत उत्पादन और परिवहन अनुप्रयोगों के साथ-साथ अन्तरिक्ष यान के ईंधन के रूप में भी किया जा सकता है |

ऑटोमोबाइल के लिए ईंधन : यह एक सबसे बड़ा प्रश्न है कि जब तेल के सभी कुएँ सूख जाएंगे तब हमारी गाड़ियों, सड़कों पर कैसे दौड़ेंगी? इस समस्या के समाधान की जोरदार कोशिशें जारी हैं |

आंतरिक दहन ईंजन के आविष्कार के समय से ही लोगों को जैव ईंधन के बारे में जानकारी है | इथेनॉल जैव ईंधन की श्रेणी में आता है | जैव ईंधन उसे कहते हैं जिसमें वनस्पति से प्राप्त उत्पादों को प्रयोगशाला में अन्य परिष्कृत उत्पाद में परिवर्तित कर और फिर उसे पेट्रो-गैसोलीन में निश्चित मात्रा में मिलकर या स्वतंत्र रूप में इस्तेमान किया जाता है | ब्राजील आज भी इस मिश्रण का सर्वाधिक उपयोग करने वाला देश है जो गैसोलीन में 25 प्रतिशत इथेनॉल मिलाता है | अमरीका भी पेट्रोल में इथेनल मिला कर इस्तेमाल करता है |

ऊर्जा उत्पादन का भविष्य चुनौतियों से भरा हुआ है | अक्षय ऊर्जा प्राकृतिक संसाधनों से प्राप्त होती है और पर्यावरण के लिए भी अनुकूलित है | इसलिए इन प्रौद्योगिकियों को अपना कर हम पर्यावरण को स्वच्छ रख सकेंगे और अपने राष्ट्र के हजारों करोड़ रूपए बचा सकेंगे जो प्रत्येक वर्ष तेल आयात में खर्च होते हैं | जब हर नागरिक अक्षय ऊर्जा स्त्रोतों को अपने व्यापार और घर में अपनाएगा तथा ऊर्जा बचाव को अपने व्यवहार में लायेगा, तभी राष्ट्र की प्रगति होगी |

"ऊर्जा का बचाव ही ऊर्जा का उत्पादन है |"

सुन्दर पहाड़ों, हरे भरे मैदानों और घने जंगलों में बिखरी सुन्दरता वाले इस देश में हम भाग्यशाली हैं कि हमें यह सब मिला है | अब यह हमारा कर्तव्य है कि हम यही सुंदर, स्वच्छ और सुरक्षित पर्यावरण अपनी आने वाली पीढ़ियों को दें | अक्षय ऊर्जा स्त्रोतों को अपनाना और ऊर्जा संरक्षण के उपाय करना ऊर्जा सुरक्षा की दिशा में दो महत्वपूर्ण कदम हैं जिससे हम अपने बच्चों के लिए इस ग्रह को हरा-भरा रख सकते हैं |

"ऊर्जा है अनमोल, मेरे देश का है ये बोल |"

योगिता
वरिष्ठ भूभौतिकीविद

सुदूर संवेदी उपग्रह (रिमोट सेंसिंग सेटलाइट) द्वारा तेल और गैस रिसाव का पता लगाना

विश्व के कई क्षेत्रों में तेल और गैस का रिसाव एक आम बात है | रिमोट सेंसिंग तकनीक द्वारा इसका पता लगाया जा सकता है | हम अपनी पांच ज्ञानेन्द्रियों (सेंसिस) के माध्यम से आस-पास की दुनिया देखते हैं | कुछ ज्ञानेन्द्रियों (स्पर्श और स्वाद) को वस्तुओं के साथ हमारे संवेदनशील अंगों के संपर्क की आवश्यकता होती है | हालांकि हम अपनी दृश्य और श्रव्य ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से आस-पास के बारे में ज्यादा जानकारी हासिल करते हैं और जिन के लिए हमारे ज्ञानेन्द्रिय अंगों को बाह्य वस्तुओं के सम्पर्क की आवश्यकता नहीं होती | दूसरे शब्दों में कहें तो हम हमेशा सुदूर संवेदक का कार्य कर रहे होते हैं |

सुदूर संवेदन (रिमोट सेंसिंग) प्रक्रिया

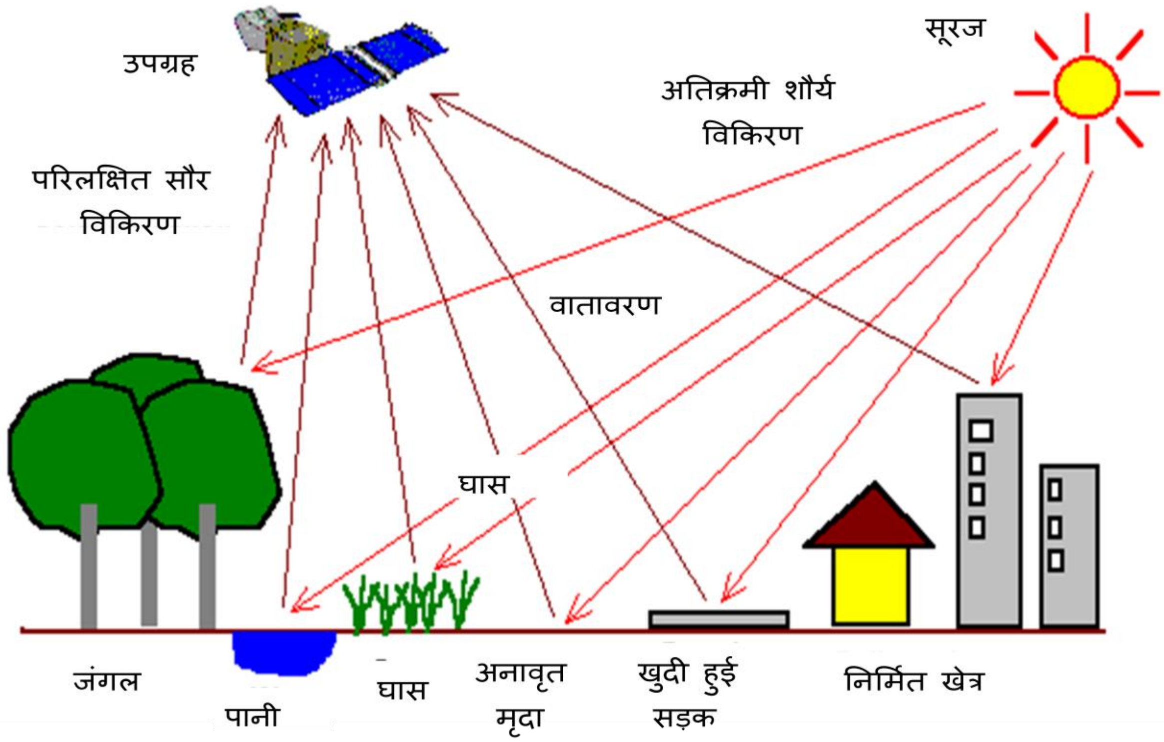

सुदूर संवेदन में, जानकारी का हस्तांतरण विद्युत चुम्बकीय विकिरण (ई.एम.आर.) का उपयोग करके किया जाता है।

ऊर्जा स्रोतों के प्रकार:

- ✓ निष्क्रिय रिमोट सेंसिंग: संवेदक (सेंसर) के प्रयोग से प्राकृतिक स्त्रोतों द्वारा परावर्तित (रिफ्लेक्टिव) या उत्सर्जित विद्युत चुंबकीय विकिरण का पता चलता है।
- ✓ सक्रिय रिमोट सेंसिंग: सेंसरों द्वारा ऐसी वस्तुओं से परावर्तित प्रतिक्रियाओं का पता चलता है जो कृत्रिम रूप से जनित ऊर्जा स्त्रोतों से विकिरणित होती हैं जैसे राडार |

तरंग दैर्ध्य (वेवलेंथ) क्षेत्रों के संबंध में:

सुदूर संवेदन (रिमोट सेंसिंग) को तरंगदैर्ध्य क्षेत्रों के संबंध में तीन प्रकार में वर्गीकृत किया गया है

- ✓ दृश्य एवं परावर्ती अवरक्त (विजुअल – रिफ्लेक्टिव इन्फ्रारेड) सुदूर संवेदन। (0.38-3.0 एनएम)
- ✓ तापीय अवरक्त (थर्मल इन्फ्रारेड)सुदूर संवेदन। (7.0-15.0 एनएम)
- ✓ माइक्रोवेव सुदूर संवेदन। (1.0-1000 मि.मी.)

कम दाब वाले क्षेत्रों में हाइड्रोकार्बन का रिसाव सतह के नीचे के भ्रंशों के द्वारा संस्तरों के माध्यम से सतह की ओर होता है |

आजकल, भूवैज्ञानिक तथा अन्वेषण भूवैज्ञानिक अनुकूल क्षेत्रों के बेसिन-मूल्यांकन के लिए रिमोट- सेंसिंग तकनीकों को बहुत उपयोगी मानते हैं |

संवेदक से एकत्र की गई सूचना के प्रत्येक बैंड में सुदूर संवेदन बहुत महत्वपूर्ण और अद्वितीय होते हैं | हम जानते हैं कि संबंधित ऊर्जा के विभिन्न तरंग दैर्ध्य का प्रभाव प्रत्येक लक्ष्य द्वारा अलग पड़ता है | वे अवशोषित, परावर्तित या अलग अलग अनुपात में पारगामित हैं। कई अनुप्रयोगों में, विभिन्न बैंडों से प्राप्त सूचना का इस्तेमान यह सुनिश्चित करता है कि लक्ष्य की पहचान और जानकारी निकलना काफी सटीक हो |

यहां हाइड्रोकार्बन प्रेरित परिवर्तन के कुछ संकेतक दिए गए हैं जैसे कि लाल संस्तरों की ब्लीचिंग, मिट्टी खनिज परिवर्तन (क्ले), कार्बोनेटतनन , (स्ट्रेसिंग) में वृद्धि, वनस्पति आदि। (यांग, वां, डेर मीर और ज़ांग 2000) |

खनिज परिवर्तन क्षेत्रों को पीले रंग में दिखाया गया है |

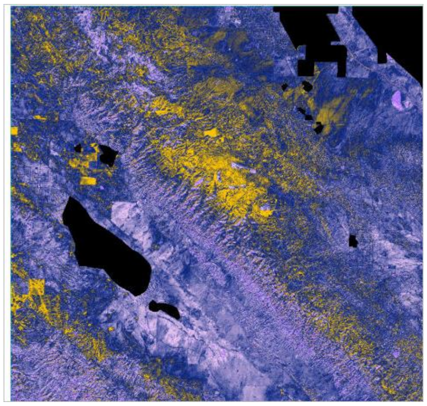

अभिजीत बिश्वास
उप अधीक्षक भूविज्ञानी

वर्तमान जीवन में नैतिक मूल्यों का महत्व

किसी भी मनुष्य के व्यक्तित्व की नींव उसके नैतिक मूल्यों पर ही आधारित होती है | नैतिक मूल्यों का संचार बाल्यावस्था से ही होना आरंम्भ हो जाता है | बालमन कच्ची मिटटी की तरह होता है, उसे जिस साँचे में चाहे ढाल सकते हैं | बाल मन में यदि उचित नैतिक मूल्यों का बीजारोपण किया जाए तो भविष्य में उसका जीवन आदर्शों एवं आशीर्वादों के फल- फूलों से विभूषित होगा |

एक समय था जब बच्चों को दादा – दादी द्वारा सुनाई गई कहानियों के माध्यम से संस्कारों व नैतिक मूल्यों का बोध होता था | लेकिन आजकल के एकाकी परिवारों में बुजुर्गों का स्थान टी. वी. और इंटरनेट ने ले लिया है | माँ – बाप के पास भी बच्चों के उचित परिवेश को जानने का समय नहीं है |

आज का युग तकनीक का युग है, यहाँ इन तकनीकों के अनगिनत लाभ हैं, किन्तु यदि नैतिक मूल्यों का अभाव होगा तो इन्हीं आधुनिक तकनीकों के दुष्प्रभाव को भी नजर अंदाज नहीं किया जा सकता | साथ ही पाश्चात्य सभ्यता से आकर्षित युवा पीढ़ी अपनी वास्तविक सभ्यता एवं संस्कृति को भूलती जा रही है |

आधुनिक संसाधनों की खोज जितनी मानव जाति के सुख के लिए हुई है, संस्कारो एवं उपयुक्त परिवेश के अभाव में उसका दुरूपयोग हुआ है | महानगरों की युवा पीढ़ी अपने संस्करो को परिधानों की तरह त्याग कर पश्चिमी संस्कारों की नकल करने में अजूबा बनती जा रही है | अनगिनत टी. वी. चैनलों को चलाने वाले मनोरंजन के नाम पर नैतिक मूल्यों की धज्जियाँ उड़ाते दिखाई देते हैं जिससे वर्तमान बचपन और युवा वर्ग उसके प्रमुख शिकार बनते हैं | ये बच्चे ही तो कल हमारा भविष्य हैं, लेकिन यदि इन्हें ही अपने नैतिक मूल्यों का बोध न कराया गया तो आने वाला भविष्य अंधकारमय होगा, इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी |

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है : "हम ऐसे आदमियों को चाहते हैं जिनकी नसें लोहे की तरह और स्नायु इस्पात की तरह मजबूत हो | जिनकी देह में ऐसा मन हो जिसका संगठन वज्र से हुआ हो | हमें चाहिए पराक्रम मनुष्यत्व, क्षत्तवीर्य और ब्रह्मतेज |"
ऋग्वेद में कहा गया है कि मातृ संस्कृति, मातृभाषा, मातृभूमि यह तीन देवियाँ सदैव भारतीय हृदयों में विराजमान रहे | सभी भारतीय दर्शन, विशुद्ध सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों पर आधारित हैं तथा नैतिकता के व्यावहारिक महत्व पर बल देते हैं | भारतीय साहित्य ने नैतिक व अनैतिक की परिभाषा को इस प्रकार एक वाक्य में व्यक्त किया है – वह कार्य जिससे दूसरों का भला हो नैतिक है और वह कार्य जिससे दूसरों को पीड़ा पहुंचे, अनैतिक है | वफादारी और नैतिकता की प्रतिष्ठा की रक्षा में भारतीय नारियां पुरुषों से बहुत आगे रही हैं | इतिहास सावित्री, सीता जैसे सैंकड़ों उदाहरणों से भरा पड़ा है |

अन्त में यह कहना चाहूँगा कि - नैतिकता के संस्कार बच्चों व किशोरों में शुरू से ही डाल दिए जाएं तो उनके भावी जीवन की आधारशिला इतनी सशक्त होगी कि परिस्थितियां विदेशी प्रभाव, सामाजिक परिवेश, राजनैतिक दबाव, आर्थिक समस्याएँ अथवा किसी प्रकार का दबाब उन्हें अपने निश्चय से कभी डिगा नहीं सकेगा |

राजीव मोहन
उप महाप्रबंधक (सत्तह)

शिक्षा में भाषा और संस्कृति

शिक्षा और संस्कृति का बड़ा गहरा रिश्ता है | दोनों ही एक दूसरे को रचती हैं और उस प्रक्रिया में भाषा माध्यम बनती है | संस्कृति की सबसे प्रबल अभिव्यक्ति भाषा में होती है और शिक्षा भी भाषा के बिना अकल्पनीय है | औपचारिक रूप से भाषा का प्रश्न हमारे संविधान का मामला है | संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल सारी भाषाएँ भारत के विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक विशिष्टता को संजोए हुए देश की बहुरंगी छटा प्रस्तुत करती है | भाषा और संस्कृति की विविधता भारतीय जीवन की एक बड़ी सच्चाई है जिसे सदैव याद रखना आवश्यक है | भाषा और उसके साहित्य में कला, परंपरा, संस्कार और साहित्य के साथ पूरी संस्कृति जीवन्त रहती है, अगली पीढ़ी तक पहुँचती है और समाज को उसका एक प्रबल आधार प्रदान करती है |

आजकल प्राय: यह चिंता व्यक्त की जाती है कि धीरे-धीरे भारतीय जन सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति उदासीन होते जा रहे है | उनमें व्यापक समाज की चिंता घटती जा रही है | इसके स्थान पर व्यक्ति की सत्ता का ज्वार तीव्र होता जा रहा है | दूसरों की चिंता की गैर मौजूदगी और घृणा का भाव समग्र समाज के विकास की दृष्टि से घातक है | आजकल दैनिक जीवन में जिस तरह की भाषा का प्रयोग नज़र आ रहा है उससे यह बात और भी स्पष्ट हो चली है कि भारतीय भाषाओं का क्षरण और मूल्यों के क्षरण, दोनों की वृद्धि समानांतर गति से चल रही है | मूल्यों के क्षरण को रोकने के लिए औपचारिक शिक्षा की व्यवस्था में कोई जगह कैसे बने यह एक प्रश्न सा बन गया है | यह सोचना ज़रूरी हो गया है कि इस काम में भाषा क्या कर सकती है ? हम भाषा की सहायता से क्या सामाजिक – सांस्कृतिक एकता की ओर बढ़ सकते है ? "मेरा और मैं" पर केंद्रित आज का स्वार्थी जग जाहिर है | इसी तरह क्षेत्र, भाषा, धर्म और जाति की संकीर्णता भी सामाजिक जीवन पर हावी हो रही है | आज एक तरह की होड़ सी मच रही है और प्रत्येक जाति और समुदाय अपने को बड़ा स्थापित करने के लिए तत्पर है |

भाषा के अध्ययन के क्रम में संस्कृति का भी परिचय मिले और सांस्कृतिक संवेदना को पनपने का अवसर मिले तो कुछ बात बन सकती है | सांस्कृतिक अपरिचय और असहिष्णुता को बदले दायरे से निपटने के लिए भाषा और संस्कृति को शिक्षा में शामिल करना एक महत्वपूर्ण शैक्षिक कदम होगा | भाषाओं की विविधता और उनके बीच संवाद स्थापित करते हुए यह काम किया जा सकता है | दुर्भाग्य से भाषा के प्रति आज हमारा दृष्टिकोण बड़ा निम्न किस्म का हो गया उसके अच्छे परिणाम नहीं है | कला, विज्ञान, प्रौद्योगिकी सभी क्षेत्रों के अध्ययन-अध्यापन में भाषा को जो महत्व मिलना चाहिए वह नहीं मिल रहा है | अच्छा तो तब होता जब भाषा के अध्यापक ही नहीं किसी भी विषय के अध्यापक को भाषा-प्रयोग की दृष्टि से समर्थ बनाया जाता | एक सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ भाषा को सीखने-सिखाने के प्रश्न को प्रभावी ढंग से शिक्षा का हिस्सा नहीं बनाया गया | परिणाम यह है कि भाषा और साहित्य को पढ़ने वाले छात्र प्राय: वे ही होते हैं जिन्हें विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वाणिज्य जैसे विषय में दाखिला नहीं मिल पाता है |

भाषाओं को लेकर कई तरह के भ्रम भी फैले हुए हैं | उदाहरण के लिए अँग्रेजी को ही समर्थ व उपयोगी भाषा माना जा रहा है | उसे पढ़ाने के लिए देशी-विदेशी, दोनों तरह के जाने कितने संस्थान खुले हैं और बड़े पैमाने पर इसका प्रचार हो रहा है कि अँग्रेजी 'कामधेनु' है | यदि अँग्रेजी की महारत पा ली तो इस जन्म में जो चाहोगे वह सब सरलता से सुलभ हो जाएगा | दूसरी ओर भारतीय भाषाओं के लिए कोई चिंता नहीं है | हम मान बैठे हैं कि भारतीय भाषाएँ तो जन्मजात हैं उनके लिए पढ़ने-लिखने की, देखभाल की कोई खास आवश्यकता नहीं है न ही उनका कोई व्यापक उपयोग है, पर यह केवल भ्रम है | आज आवश्यकता है कि संस्कृति के विभिन्न और बहुआयामी रूप को उजागर करने वाले पाठ भाषा के अध्ययन में शामिल किए जाए | उनके माध्यम से देश में पारस्परिक सांस्कृतिक निकटता को सुदृढ़ किया जा सकता है | कविता, कहानी, नाटक इत्यादि इसके लिए अच्छे माध्यम साबित होंगे | चूंकि भाषा में संस्कृति का जीवन संपादित होता है इसलिए भाषाओं की रक्षा आवश्यक है | भाषाएँ न छोटी होती है न बड़ी, हमें सभी भाषाओं को समान आदर देना चाहिए |

विजेंद्र सिंह
मुख्य रसायनज्ञ

"Deccan Synclise रहस्य एवं तेल व गैस के खोज की सम्भावनाएं"

भारतीय उपमहाद्वीप में निरंतर "हाइड्रोकार्बन" द्वारा प्राप्त ऊर्जा की खपत की बढ़ती हुई मांग से तथा उपलब्ध तेल एवं गैस क्षेत्रों के दोहन से समाप्त होते हुए ऊर्जा स्त्रोतों से आज यह अतिआवश्यक हो गया है कि जटिल भूगर्भीय परिस्थितियों में नए तेल-गैस के क्षेत्रों के मौजूद होने की संभावनाओं का पता लगाया जाए | जटिल भूगर्भीय परिस्थितियों से हमारा तात्पर्य कम गहराई पर पाए जाने वाले कार्बोनेट क्षेत्र, अत्यधिक भूगर्भीय उथल-पुथल के शिकार तथा ज्वालामुखी के फटने से निकले हुए लावा की परतों के नीचे चले जाने वाले क्षेत्र इत्यादि हैं | विश्व के एक बहुत बड़े भू-भाग में इस तरह के क्षेत्र पाए जाते हैं; जैसे कि उत्तरी अमरीका का कोलम्बिया का क्षेत्र, दक्षिणी अमरिका का पुराना क्षेत्र तथा भारतीय उपमहाद्वीप का दक्षिण का पठारी क्षेत्र | दक्षिण का पठार भारत के मध्य भाग में स्थित है और लगभग चार लाख वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है | पृथ्वी की उत्पत्ति और विकास यात्रा के कालक्रम का जब हम अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि लगभग 600 लाख वर्ष पूर्व जब डायनासोर युग अपनी समाप्ति पर था | ज्वालामुखियों के फटने से लावा का वृहत मात्रा में उत्सर्जन हुआ जिसने लगभग चार लाख वर्ग कि० मी० में फैलकर अपने नीचे दबी संरचना को अगम्य बनाकर पृथ्वी के रहस्य जानने वाले भू-वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौती खड़ी कर दी | लावा की इन मोटी-मोटी परतों का वेधन करके नीचे के अवसादों (Sediments) की परतों का दोहन एक दुस्तर कार्य है | लावा की इन परतों की अधिकतम अनुमानित गहराई तथा फैलाव की संरचना का अध्ययन काफी लंबे अर्से से देश-विदेश के वैज्ञानिकों की जिज्ञासा का विषय रहा है | ब्रिटिश काल से लेकर आजतक विभिन्न संस्थाएं जिनमें भारतीय भू-वैज्ञानिक, सर्वेक्षण राष्ट्रीय भूभौतिकी अनुसंधान संस्था, हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय, ओ.एन.जी.सी., भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के अधीन) तथा अन्य कई शिक्षण संस्थानों ने अपने-अपने प्रयासों तथा योगदान से उम्मीदों की किरण दिखाई है | मौजूदा तेल और गैस के भंडारों के आंकड़ें इस बात की ओर इंगित करते हैं कि विश्व का 54% कच्चा तेल तथा 44% गैस के भंडार इसी प्रकार की संरचना में मिले हैं जिन्हें हम मध्य जीवी महाकल्प की परतदार चट्टानें Mesozoic sediments की संज्ञा देते है | ओ.एन.जी.सी. नागपुर पुसाद-वेतुल में किए गए अध्ययन से पता चलता है कि इन अवसादों की मोटाई जहां वर्धा शहर के पश्चिम में 2.1 के कि० मी० के आसपास है वहीं काटोल क्षेत्र में 5.74 कि० मी० मोटाई (Thickness) पाई जाती है |

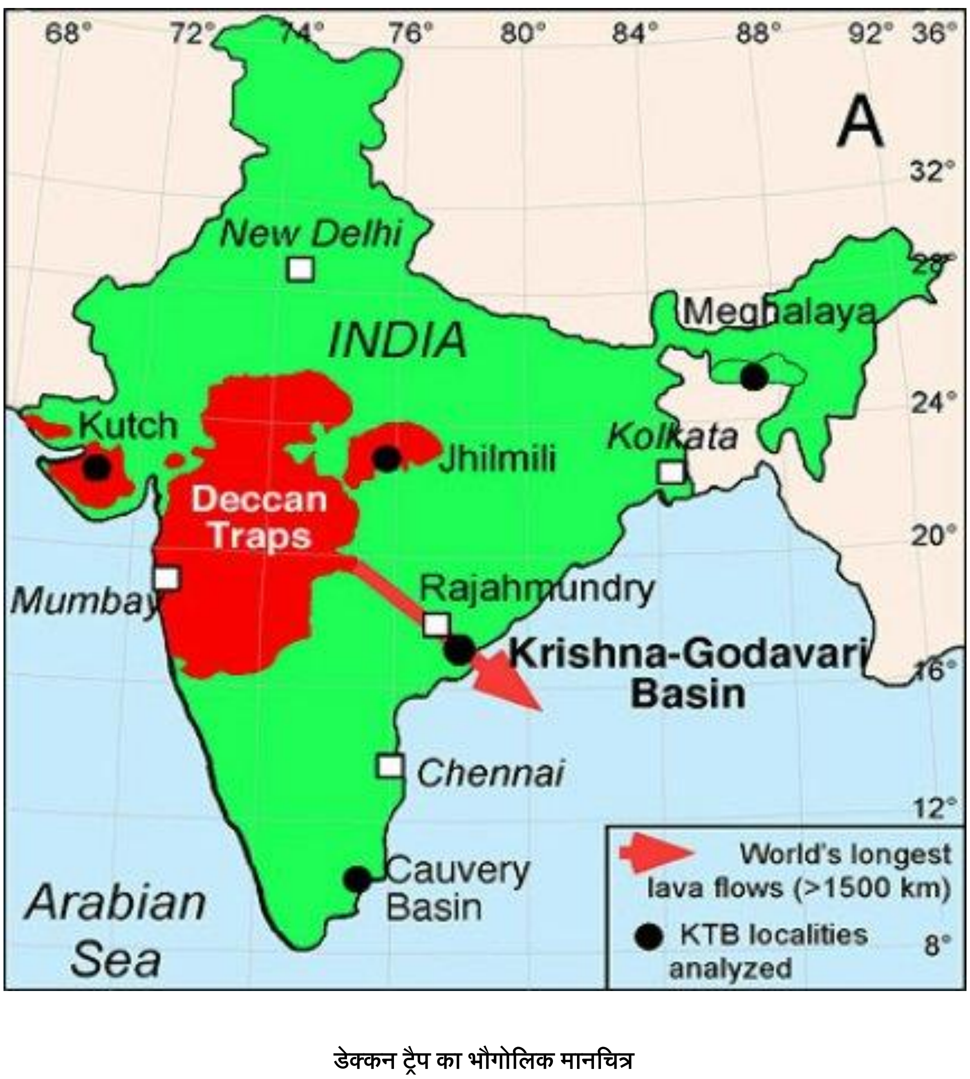

डेक्कन ट्रैप का भौगोलिक मानचित्र

Geological Map of Deccan Trap

विभिन्न अध्ययनों के आधार इस मेसोज़ोइक सेडीमेंटस की संभावित स्ट्रेटीग्राफी का परिदृश्य कुछ इस प्रकार हैं :-

समयमान	संरचना समूह	अनुमानित अधिकतम मोटाई	आश्मी (लिथोलोजी)
Recent	Alluvium		
Pleistocene	Laterite		
Early Paleocene to Late Cretaceous	Deccan Trap	1 to 2 km	Basalt
-------------------------विषमविन्यास (Unconformity)-------------------------			
Late Cretaceous Middle Triassic	Lameta Beds Upper Gondwana	2 km	Arenaceous Limestone Sandstone & Shale
------------------------- विषमविन्यास (Unconformity)-------------------------			
Early Triassic to Late Carbonifero us	Lower Gondwana	1.5 km	Sandstone & Shale Interbedded with coal
-------------------------विषमविन्यास (Unconformity)-------------------------			
विंध्यान अवसादों की बारीक पुरान्त:शायी (आउटलिएर्स) युक्त बेस मेंट Basement with thin outliers of Vindhyan sediments at places			

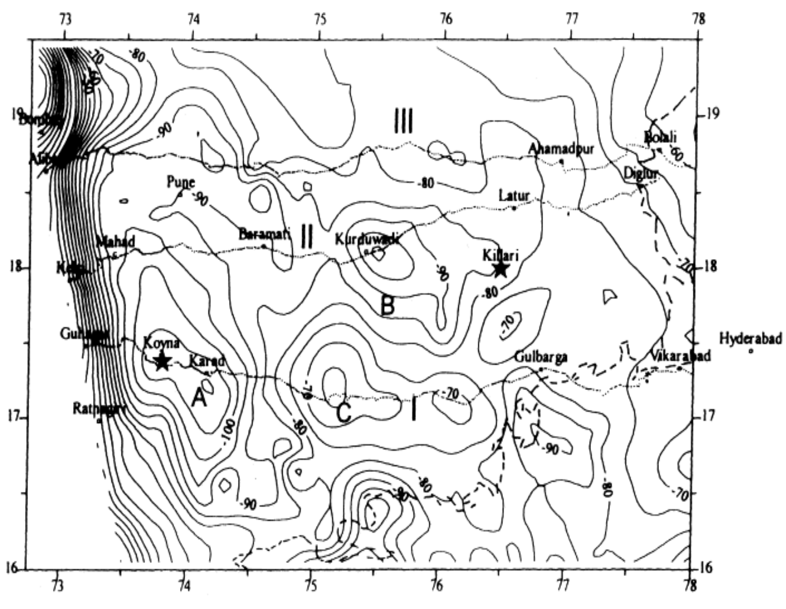

डेक्कन टेल्युरिक चुम्बकीय मानचित्र

Magneto Telluric Map of Deccan Synclise

डेक्कन Synclise के गर्भ में छुपे Mesozoic Sediments में तेल एवं गैस की सम्भावनाएं इस क्षेत्र में लिए गए मृदा नमूनों के भूरसायनिक परीक्षण से जिसमें Isotopic Signature तथा Propane Oxidizing bacteria की उपस्थिति एवं विश्लेषण इस बात की ओर इंगित करते हैं कि औरंगाबाद, अहमदनगर, शिर्डी, भुसावल और इंदौर के आसपास के क्षेत्र भविष्य में तेल एवं गैस की उपस्थिति का आश्वासन देते हैं | Deccan Synclise को super

order negative platform की संज्ञा भी दी गई है | लावा के प्रवाह से उत्सर्जित ऊर्जा Mesozoic Sediments में हाइड्रोकार्बन उत्पन्न होने में सहायक सिद्ध हो सकती है | मृदा के नमूने में पाए जाने वाले Light Hydrocarbons c1 and c2+ क्रमश: 3 to 1187 ppb and 1 to 1449 ppb है | कार्बन isotopic signature △ c13 की range 24 to -39.41 पी.डी.बी. (Pee, deeBelamnite) इनके thermogenic होने की पुष्टि करते हैं |

सुदूर संवेदी आंकड़ों द्वारा हमें Deccan Synclise के विस्तार का पता चलता है | उत्तर में इसका फैलाव नर्मदा सोन रिफ्ट से लेकर दक्षिण में Precambrian Sediments एवं Archian metamorphic sediments के exposures तक सीमित पाया जाता है | गुरुत्वीय आंकड़ों एवं गहराई से प्राप्त भूकम्पीय आलेख के आंकड़ों का अध्ययन बतलाता है कि कोयना रिफ्ट तथा कुरडुवाड़ी रिफ्ट जिनकी लंबाई क्रमश: 540 km तथा 390 km है तथा पुणे के उत्तर में आपस में मिल जाती है | डी.जी.एच. एवं ओ.आई.डी.बी. प्रायोजित अध्ययन जिसमें अलग-अलग माध्यमों से एकत्रित सूचनाओं एवं आंकड़ों को एक साथ रखकर, जिसमें मुख्यत: Gravity Magnetic, Magneto Telluric, Deep Resistivity Sounding तथा Reflection Seismic Sounding से Deccan Trap में समाहित छोटी-छोटी सेडीमेंटरी बेसिनस के Sediment की मोटाई और आधार के प्रारूप का पता चलता है |

कोयना क्षेत्र में पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा एक कूप वेधन किया जा रहा है जो लगभग 7000 मीटर गहरा होगा | यद्यपि उसका उद्देश्य कोयना बांध के आसपास वाले क्षेत्र में Micro seismicity की आकृति और तीव्रता संबंधी अध्ययन करना होगा किन्तु वेधन से प्राप्त आंकड़ें अपने साथ बहुत कुछ कहानी लेकर आएंगे | हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय के तत्वाधान में DS-ONN-2003/1 एवं DS-ONN-2004/1 इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए NELP-V और NELP-VI आफ़र दिए थे जिन्हें Geo Global Resources Company ने अर्जित किए थे किन्तु विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनुमति की बाध्यता के भंवर जाल में फंसकर अपेक्षित कार्यक्रम को पूरा कर पाना ऑपरेटर को दुश्वार लग रहा है | उम्मीद है कि निकट भविष्य में कुछ समाधान निकल जाए |

वर्तमान में उपलब्ध भू-विज्ञान के आंकड़ों से की गई संकल्पना के आधार पर डेक्कन ट्रैप जिसकी मोटाई लगभग औसतन 2 कि.मी. है, के गर्त में लगभग 2 से 3 कि.मी. तक Mesozoic काल के गोंडवाना समूह की रेतीली चट्टानों में पेट्रोलियम के संग्रहण की उपयुक्त क्षमता है और पेट्रोलियम भंडारण के लिए आगार की भूमिका निभा सकते है | लोअर गोंडवाना सिरीज़ के डार्क ग्रे शैल और मार्ल्स पेट्रोलियम के स्त्रोत तथा अंत: सरंचनात्मक शेल एवं ट्रैप प्रवाह एक अच्छी कैप रॉक की भूमिका निभा सकते हैं | आने वाले समय में आधुनिक तकनीकी का उपयोग करके Deccan Synclise के Mesozoic Sediments से तेल एवं गैस की खोज में सफलता मिलती है तो भारत की ऊर्जा सुरक्षा की दिशा में एक बड़ी उपलब्धि होगी |

अनिल कुमार मिश्रा
उप महाप्रबंधक (भूभौतिकीविद)

चुटकुले

1. गोलू की शादी हो गई और उनका वैवाहिक जीवन शुरू हो गया | एक बार गोलू ने अपनी पत्नी से पूछा कि तुमने मुझमें ऐसा क्या देखा कि तुम मुझ से शादी के लिए तैयार हो गई ?
   गोलू की पत्नी : मैंने दो-तीन बार आपको बर्तन मांजते देखा था | गोलू यह सुन कर 'बेहोश' हो गया |

2. फेसबुक : मैं सबको जानती हूँ |
   गूगल : मेरे पास सब कुछ है |
   व्हाटसएप्प : मैं सब की जान हूँ |
   इंटरनेट : मेरे बिना तुम सब कुछ नहीं |
   चार्जर (जोश में) : आवाज़ नीचे |

3. साधारण लोग : आइ वांट टू गो टू टॉयलेट.
   गुलज़ार साहब : मचलती हैं पेट में कुछ लहरें ऐसी, लगता है इन्हें किसी किनारे की तलाश है !

4. पापा : बेटा, तुम्हारे रिज़ल्ट का क्या हुआ ?
   पप्पू : पापा, 80% आए हैं |
   पापा : पर मार्कशीट पर 40% लिखा है !
   पप्पू : बाकी के 40% आधारकार्ड लिंक होने पर सीधे अकाउंट में आएंगे |
   पापा सुन के बेहोश !

5. एक वकील की कलम से
   जज : तुमने समाज के लिए कौन सा भला काम किया है ?
   अपराधी : साहब, हमारे कारण ही पुलिस और अदालत में, लाखों लोगों को नौकरी मिली हुई है |

6. एक ताऊ रेलवे स्टेशन क्रॉस करते-करते अचानक पटरी के बीचों-बीच दौड़ने लगा |
   किसी ने पूछा : ताऊ, क्या कर रहे हो ?
   ताऊ बोला : हट जाओ, आज तुम्हारा ताऊ, सबवे सर्फर खेलेगा |

7. पुलिस (चोर से चोरी के बाद) : तुम्हें कैसे पता चला कि इनके घर पर कोई नहीं है ?
   हाइटेक चोर : इन्होंने फेसबुक पर पूरे परिवार के 15 फोटो डाले थे और लिखा था "एन्जॉय, फुल मस्ती इन नैनीताल"

8. मैडम : पप्पू, मैंने तुम्हें थप्पड़ मारा, इसका भविष्यकाल बताओ ?
   पप्पू : मैडम छुट्टी के बाद आपकी एक्टिवा पैंचर मिलेगी |

9. ज्ञान की बात
   चाहे कितनी भी अंग्रेजी सीख लो परन्तु अगर कुत्ता पीछे पड़ जाए तो हट्ट-हट्ट ही कहना पड़ता है |

10. पति : आजकल, तुम न सिगरेट पीने से रोकती हो न शराब पीने से, क्या हुआ, सब शिकायतें खत्म ?
    पत्नी : नहीं, एल.आई.सी. वाला परसों ही सब फायदे बता कर गया है |

राकेश जैन

विद्वानों के अनमोल कथन

1. हिंदी देश की एकता की कड़ी है|

   (डा० ज़ाकिर हुसैन)

2. देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता स्वयं सिद्ध है|

   (आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी)

3. सरलता और शीघ्र सीखी जाने वाली भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है|

   (लोकमान्य तिलक)

4. हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है|

   (महर्षि दयानन्द सरस्वती)

5. हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है|

   (सुमित्रानन्दन पंत)

6. विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है|

   (वाल्टर चेनिंग)

7. हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और दृढ़ करती है|

   (राजर्षि टंडन)

8. हिंदी भाषा की उन्नति का अर्थ है राष्ट्र और जाति की उन्नति|

   (रामवृक्ष बेनीपुरी)

9. राष्ट्रभाषा का प्रचार करना मैं राष्ट्रीयता का एक अंग मानता हूँ|

   (डॉ. राजेन्द्र प्रसाद)

10. हिंदी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक व्यवहार में आनेवाली भाषा है|

    (राहुल सांस्कृत्यायन)